RAJBIL26868/2016/1284525
वर्ष 3 अंक 1 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका
सितम्बर 2019

पेज संख्या : 36 राजसमंद
प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

औद्योगिक मंदी की मार में बेकाबू बेरोजगारी

संविदाकर्मी की दबंगई निजी स्कूलों पर, अपनी दुकान से ही पुस्तकें खरीदने का दबाव!

"SHREE" Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101
धमाका ऑफर
लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....
ब्राण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में
ब्राण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

अपने **बिजनेस**
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।

स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-

सम्पर्क **शक्ति एडवरटाइजिंग**
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

सादर अनुरोध

पाठकगणों से अनुरोध है कि ज्यादातर पाठकों के **जयवर्द्धन पत्रिका** की वार्षिक सदस्यता पूरी हो चुकी है। इसीलिए वार्षिक सदस्यता के लिए **जल्द 200 रुपए या तीन वर्ष की सदस्यता के लिए 500 रुपए जमा करवा कर** शक्ति स्पोर्ट्स शास्त्री मार्केट कांकरोली अथवा हमारे प्रतिनिधि से रसीद प्राप्त कर सदस्यता नवीनीकरण करवाएं।

संपर्क : 94142-39648

Tension ®

Durgesh Singh Bhati
7230059101

Bhupendra Singh Bhati
8769955630

Manufacture & Wholesaler of jeans, Shirt & Readymade Garments

999 में 4 शर्ट

999 में 2 जिंस

Shop No. 2, 100ft. Road, In Front of Kawadiya Hospital, Rajsamand (Raj.)
Tel. : 02952-221144 E-mail : tensionjeans1993@gmail.com

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
विजय शर्मा

सह सम्पादक
हितेन्द्रसिंह चौहान

सम्पादन सहयोगी
सूर्यप्रकाश दीक्षित

विज्ञापन प्रबंधक
जितेन्द्र शर्मा
गणपतसिंह

वितरण विभाग
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे, नरेश पालीवाल

कार्यालय पता
C/O **शक्ति स्पोर्ट्स**, शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 94142-39648, 99500-84705

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता का शुल्क मात्र 200 रुपए

"SHREE"
Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101

सम्पादकीय

आर्थिक मंदी से त्रस्त उद्योग जगत

दुनियाभर में आर्थिक मंदी की आहट सुनाई देने लगी हैं। इस आर्थिक मंदी से आयात- निर्यात में असंतुलन आने से महंगाई के कारण भारत में भी आम लोगों की परचेजिंग पॉवर घटती जा रही है। इसके चलते उद्योगों का पहिया थम रहा हैं। उत्पादक कंपनियों ने लागत घटाने के लिए अपने कर्मचारियों की छंटनी का सहारा लेना शुरू कर दिया हैं, जिससे बेरोजगारी बढ़ गई है। आर्थिक ग्रोथ तिमाही दर तिमाही सुस्त पड़ती जा रही है। देश का सबसे बड़े सेवाकरदाता यथा ऑटो सेक्टर, रियल स्टेट्स, मार्बल सेक्टर, मेटल्स एण्ड वायर्स, हार्वेस्टिंग और टेक्सटाइल सेक्टर में रिवर्स गियर लगा हैं। भारत के सभी उद्योगों में पिछले 9 महीने से बिक्री में गिरावट आई हैं।

आजादी के बाद भारत में यह तीसरी बड़ी मंदी का दौर है, जो लगभग अगले आठ से दस माह तक और रहेगा। सरकार अगर जल्दी ही अपने देश में कुछ ठोस कदम उठाए और ब्याज दरों, सेवा करों में संतुलन ले आए, तो आम जनता के साथ उद्योग धंधों को राहत मिल सकती है। बेरोजगारों को पुन: नौकरियां मिल सकती हैं। उत्पादन बढ़ सकता हैं। आर्थिक हालत मांग और आपूर्ति पर निर्भर हैं। मांग से ज्यादा उत्पादन हो चुका हैं, बिक्री नहीं हो रही हैं। मांग नहीं होने से उद्योग मालिकों के पास धन नहीं हैं। यही अंतर मंदी का कारण है।

राजस्थान के राजसमंद और मकराना मार्बल उद्योग सरकार की गलत आर्थिक नीतियों के कारण मंदी की आंच में झुलस रहा है। यहां के मार्बल व्यापारी व मार्बल खदानों में काम करने वाले मजदूरों की स्थिति बहुत दयनीय हो गई है। हर दिन हजारों मजदूर अपनी जान जोखिम में डालकर 250- 500 फीट गहरी हो चुकी खदानों में नीचे से मार्बल निकालते हैं। खदानों के गहरी होने से उत्पादित माल का लागत मूल्य बहुत ज्यादा हो जाता हैं। ऊपर से सेवाकर तथा ट्रांसपोर्ट चार्ज से व्यापारी वर्ग भी लगभग डूब रहा हैं। इससे मार्बल की चमक फिकी पड़ने लगी है। राजसमंद जिले के धोलीखान, मोरवड़, सापोल, थोरिया, झांझर, उमठी, केलवा, निर्झरना, आमेट, आगरिया व देवगढ़ क्षेत्र में लगभग दो हजार मार्बल, ग्रेनाइट, क्वाट्‌र्स-फेल्सपार की खदानें हैं। इनसे प्रतिदिन हजारों टन माल उत्पादित होता हैं। इनसे राज्य सरकार को करोड़ो रुपए का राजस्व मिलता हैं। नरेन्द्र मोदी सरकार ने मार्बल एवं ग्रेनाइट स्लैब व इनसे बनी वस्तुओं पर सेवाकरों की दरों में 28 फीसदी से घटाकर 18 फीसदी कर मार्बल उद्योग को मंदी से बचाने का प्रयास किया है, जो राहत योग्य नहीं है। इस उद्योग को भी मंदी से निकालने के लिए ठोस उपाय करने चाहिए, ताकि लाखों मजदूरों पर से बेरोजगारी की लटकती तलवार हट सकें।

अतिथि सम्पादक

गोविंदसिंह चौहान
भागावड़, भीम राजसमंद
मो. 9783207045

इस अंक में खास...

1. कवर स्टोरी 1 : औद्योगिक मंदी की मार में बेकाबू बेरोजगारी — पेज- 4
2. कवर स्टोरी 2 : संविदाकर्मी की दबंगई निजी स्कूलों पर — पेज - 6
3. बदलता समाज : अन्तर्जातीय विवाह — पेज- 10
4. आह्वान : जब शासक बनेंगे राष्ट्रभक्त — पेज- 12
5. चिंतन : मां की दखलंदाजी से घर में कलह — पेज - 14
6. अहसास : खुशी के पल — पेज - 15
7. माटी का लाल: संत भूतगिरी बावजी — पेज - 16
8. व्यंग्य : हिन्दी का जिन्न — पेज - 19
9. गुमनाम शख्सियत : गोविन्द औदीच्य — पेज - 20
10. सत्यकथा : बाल विवाह का दंश — पेज - 22
11. मेरा गांव, मेरे लोग : नवला बा — पेज - 23
12. हमारी संस्कृति : ऋषि या कृषि पंचमी — पेज- 25
13. संस्मरण : राजसमंद झील की परिक्रमा — पेज - 28
14. तीखी मिर्ची : भयभीत हवलदार — पेज - 31
15. गजल — पेज - 33
16. मेवाड़ी चौपाल : गारा रौ ठामड़ो — पेज - 34

औद्योगिक मंदी की मार में बेकाबू बेरोजगारी

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक मंदी तथा देश में नोटबंदी व जीएसटी लागू होने के बाद औद्योगिक जगत बूरी तरह से मंदी की चपेट में है। इसका व्यापक असर ऑटोमोबाइल सेक्टर, टैक्सटाइल उद्योग के साथ बड़े स्तर पर रोजगार देने वाले कारखानों पर पड़ा है। अनवरत घटती बिक्री के कारण कई कारखानों ने उत्पादन घटा दिया है। उनके गोदामों में बड़ी तादाद में माल का स्टॉक पड़ा है। जो उद्योग पहले चारों शिफ्ट में चलते थे, आज सिर्फ एक शिफ्ट संचालित हो रहे हैं, जिससे तीन शिफ्ट में कार्य करने वाले श्रमिक बेरोजगार हो गए हैं। पूरे देश के साथ ही बेरोजगारी की समस्या राजसमंद जिले में भी उभर कर सामने आई है। यहां मार्बल- ग्रेनाइट की खदानें, मार्बल गैंगसा युनिट, कटर के साथ मिनरल (क्वार्टज- फेल्सपार) प्लांट भी ज्यादातर बंद के कगार पर है। विदेशी मार्बल व सिरामिक टाइल्स बाजार में आने के बाद से ही मार्बल की बिक्री घटने लगी थी, मगर अब गहरी होती खदानों से घटते उत्पादन, बढ़ती लागत, महंगे टैक्स, लगातार घट रही बिक्री के कारण बाजार में कारोबारियों के लिए टिके रहना मुश्किल होता जा रहा है। इसके चलते राजसमंद जिले में पिछले कुछ वर्षों में 500 मार्बल खदानें और 300 से अधिक मार्बल कटर बंद हो चुके हैं। कुछ गैंगसा युनिट एक तो कुछ दो शिफ्ट में ही संचालित होने लगे हैं। इस कारण करीब 20 हजार से ज्यादा मजदूरों के साथ सुपरवाइजर, तकनीकी कार्मिक व लेखाकर्मी के रूप में कार्य करने वाले शिक्षित युवा भी बेरोजगार हो गए हैं। मार्बल उद्योग में फैली बेरोजगारी व मंदी का असर पूरे राजसमंद की जनता पर पड़ा है।

बाजार पर विपरीत प्रभाव

मार्बल उद्योग की मंदी व बढ़ती बेरोजगारी के कारण जिले के बाजार पर भी विपरीत प्रभाव पड़ा है। खानों, गैंगसा युनिट, गोदामों के आस पास की किराणा दुकानें, चाय की थड़ी, होटल- रेस्टोरेंट भी काफी बंद हो चुकी है।

ठप के कगार पर ट्रांसपोर्ट व्यवसाय

मार्बल, ग्रेनाइट व टाइल्स के आदान प्रदान में संलग्न ट्रांसपोर्ट कारोबार पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। ट्रेक्टर, कम्प्रेशर, ट्रक, ट्रेलर, डम्पर के साथ ऊंटगाड़ियों चलाने वाले को सप्ताहभर दो से तीन भाड़े ही मिल रहे हैं, जिससे वाहनों का टैक्स, किश्तें भरने के साथ चालक व सहायक श्रमिकों का गुजारा चलाना भी मुश्किल होता जा रहा है। ऐसे में कई लोग नए व्यवसाय का विकल्प तलाश रहे हैं, वहीं कई लोग रोजगार के लिए भटक रहे हैं।

भूखंड- मकान के खरीदार ही नहीं

नोटबंदी के बाद से रियल स्टेट का कारोबार मंदी का शिकार हो गया था, मगर अब राजसमंद में मार्बल उद्योग मंदी ने बूरी तरह से प्रभावित किया है। नई कॉलोनियों के प्लान धरे के धरे रह गए हैं, तो महंगी दरों पर खरीदे गए भूखंड व मकान अब लोग सस्ती दर पर बेचने को मजबूर हो गए हैं।

सबसे ज्यादा प्रभावित है ऑटो सेक्टर

जुलाई 19 में कार और बाइक्स की बिक्री में 41 फीसदी की गिरावट आई हैं। इसके चलते ऑटो सेक्टर में साढ़े तीन लाख से ज्यादा कर्मचारियों को नौकरियों से निकाला गया हैं। इतना ही नहीं करीब 10 लाख से ज्यादा लोगों की नौकरियों पर खतरा मंडराने लगा हैं। खेती के बाद सबसे बड़ा लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाने वाले कपड़ा उद्योग (टेक्सटाइल सेक्टर) की भी हालत खराब है। यह सब पैरामीटर इस बात के संकेत दे रहे हैं कि भारत भी वैश्विक मंदी में झकड़ता जा रहा हैं।

पहली मंदी आई थी 1991 में

आजादी के बाद 1991 की पहली मंदी आई थी। उस आर्थिक मंदी के पीछे आंतरिक आर्थिक कारण थे। 1990 के अंत में खाड़ी युद्ध के कारण भारत की अर्थव्यवस्था पर आंच आई थी। कच्चे तेल के भावों

में भारी बढ़ोतरी से आयात- निर्यात व्यापार संतुलन गड़बड़ा गया था। उत्पादन लागत मूल्य निर्धारित मूल्य से ज्यादा आ रहा था। बिक्री मूल्य कम होने से भारत का राजकोषीय घाटा बढ़ गया था। सरकार अन्तर्राष्ट्रीय कर्ज चुकाने में असमर्थ होने लगी। तत्कालीन प्रधानमंत्री चंद्रशेखर सरकार ने रिजर्व बैंक का सोना गिरवी रख भारत की आंतरिक अर्थव्यवस्था को संभाला। चंद्रशेखर सरकार अपना वार्षिक बजट तक पेश नहीं कर पाई थी। दूसरी बड़ी मंदी 2008 में आई। यह भी वैश्विक मंदी थी। इससे भारत की अर्थव्यवस्था को उतना नुकसान नहीं हुआ था। वैश्विक मंदी का दीर्घकालिक असर नहीं होता हैं।

वर्तमान में है वैश्विक मंदी

वर्तमान में जो मंदी है, वह भी वैश्विक मंदी हैं। अमेरिका- चीन के व्यापारिक रिश्तों में तल्खी व अमेरिका द्वारा चीन सहित कुछ देशों पर वित्तीय व व्यापारिक प्रतिबंधों से यह मंदी आई हैं। आरबीआई ने वैश्विक मंदी को देखते हुए अपनी मौद्रिक समिति की बैठक में कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था की जीडीपी ग्रोथ रेट पूर्वानुमान से घटकर

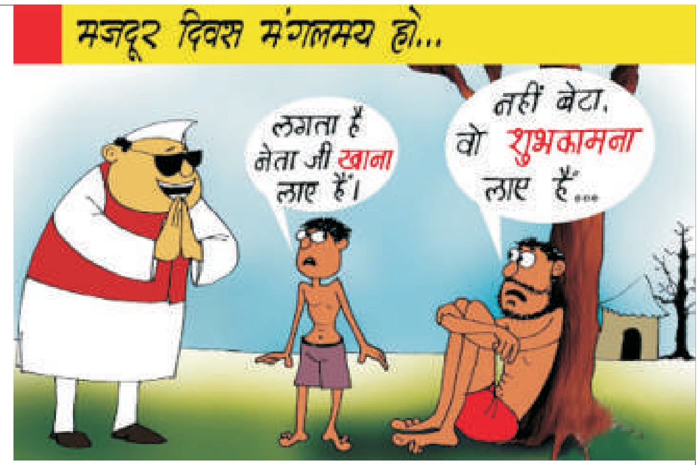

6.0 फीसदी कर दी है। भारतीय बैंकिंग, बीएसएनल, हिन्दुस्तान ऐयरोनोटिकल, भारतीय डाक सेवा घाटे में चल रही हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था एक मजबूत सरकार में कमजोर आंकडों पर चल रही हैं। मोदी सरकार 2.0 के पहले बजट के बाद बाजार में निवेशकों के 12 लाख करोड़ डूब चुके हैं। नोटबंदी आर्थिक सुधार की जगह एक बड़ा आर्थिक संकट लेकर आया। जीएसटी से बाजार में बड़ा आर्थिक संकट आया, जिसका खराब असर देखने को मिला। लिहाजा, सरकार को अर्थव्यवस्था में छोटे संस्थागत सुधार की बजाय बड़े और व्यापक बदलाव करने होंगे। बैंकों में तरलता बढ़ाकर जीएसटी संशोधन कर न्यूनतम स्तर पर लाना होगा। बैंकिंग फ्रोड को रोकना होगा तथा बड़े व्यापारियों, पूंजीपतियों के माफ किए जाने वाले कर्जो की नीति को बंद करनी होगी।

आर्थिक मंदी के ये चार बड़े कारण

- पहली वजह तो अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें हैं, जिसका असर महंगाई दर पर पड़ा है।
- दूसरी वजह डॉलर के मुकाबले रुपए की घटती कीमत है। एक अमेरिकी डॉलर की कीमत 72 रुपए हो गई है।
- आयात के मुकाबले निर्यात में गिरावट से देश का राजकोष घाटा बढ़ा और विदेशी मुद्रा भंडार में कमी आई है।
- अमेरिका और चीन के बीच जारी ट्रेड वॉर की वजह से भी दुनिया में आर्थिक मंदी का खतरा तेजी से बढ़ रहा है, जिसका असर भारत पर भी पड़ा है।

सोने-चांदी के आयात में कमी

मंदी की आहट का ही असर है कि अप्रैल से जून 2019 की तिमाही में सोना- चांदी के आयात में 5.3 फीसदी की कमी आई है, जबकि इसी दौरान पिछले साल इसमें 6.3 फीसदी की बढ़त देखी गई थी। निवेश और औद्योगिक उत्पादन के घटने से भारतीय शेयर बाजार में भी मंदी का असर दिख रहा है। सेंसेक्स 40 हजार का आंकड़ा छूकर अब फिर 37 हजार पर आकर अटक गया है।

संविदाकर्मी की दबंगई निजी स्कूलों पर, अपनी दुकान से ही पुस्तकें खरीदने का दबाव!

हटाने के बाद भी सीडीईओ की बजाय प्रारंभिक में ड्यूटी दे रहा संविदाकर्मी

हितेन्द्रसिंह चौहान @ राजसमंद

liverajsamand.com

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी, समग्र शिक्षा विभाग राजसमंद में संविदा पर कार्यरत कम्प्यूटर ऑपरेटर प्रांजलसिंह झाला के विरुद्ध निजी स्कूल संचालकों को डरा, धमकाकर उसकी स्टेशनरी दुकान से ही पाठ्य पुस्तकें खरीदने का दबाव बनाने के आरोप को लेकर पुस्तक विक्रेता संघ राजसमंद ने जिला कलक्टर अरविंद पोसवाल व मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी को शिकायत की। इस पर मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी मधुसूदन व्यास द्वारा तत्काल प्रभाव से प्रारंभिक शिक्षा कार्यालय में अस्थायी तौर पर आरटीई का कार्य करने वाले कम्प्यूटर ऑपरेटर प्रांजलसिंह झाला को हटाकर मूल पद स्थापन स्थान मुख्य जिला शिक्षा कार्यालय में लगा दिया। साथ ही गंभीर अनियमितता की शिकायत की जांच के लिए कमेटी का गठन कर दिया। हालांकि एक माह बाद भी जांच नहीं हो पाई है। यही नहीं, प्रारंभिक शिक्षा विभाग में आरटीई शाखा से हटाने के बाद कम्प्यूटर ऑपरेटर कुछ दिन बाद फिर से उसी जगह कार्य करने लग गया है। इससे समूचे शिक्षा महकमे की भूमिका पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

पुस्तक विक्रेता संघ राजसमंद के अनिल बोहरा, श्रेयांस शर्मा, आशीष जैन, दामोदर शर्मा ने 31 जुलाई 2019 को जिला कलक्टर को ज्ञापन दिया। ज्ञापन में आरोप है कि संविदा पर कार्यरत प्रांजलसिंह के पिता महेन्द्रसिंह झाला भी शिक्षा विभाग में उच्च अधिकारी है। इसके तहत प्रांजलसिंह कम्प्यूटर ऑपरेटर होते हुए भी अधिकारी की तरह रौब जताते हुए निजी स्कूल संचालकों पर अनैतिक दबाव बनाने का आरोप है।

आरोप है कि शिक्षा विभाग में कार्यरत होने का प्रभाव दिखाकर कम्प्यूटर ऑपरेटर द्वारा निजी स्कूल संचालकों को डरा, धमकाकर व लालच देकर पुस्तकें खरीदने के ऑर्डर देने का दबाव बनाया जा रहा है। कई स्कूल संचालकों को तो शिक्षा विभाग कार्यालय में बुलाकर ऑर्डर लिए जा रहे हैं, जिसकी पहले भी शिक्षा विभाग के अधिकारियों को शिकायत की, मगर कोई कार्रवाई नहीं की गई। यही नहीं, पुस्तक विक्रेताओं ने कम्प्यूटर ऑपरेटर प्रांजल से मिलकर निजी स्कूल संचालकों पर अनैतिक दबाव नहीं बनाने की हिदायत दी गई। इसके बावजूद कम्प्यूटर ऑपरेटर की मनमानी नहीं थमी है।

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

पुस्तक विक्रेताओं को धमकाने का आरोप

ज्ञापन में बताया कि पुस्तक विक्रेताओं द्वारा कम्प्यूटर ऑपरेटर को पद का दुरुपयोग नहीं करने का आग्रह किया, तो कम्प्यूटर ऑपरेटर ने धमकी दी कि तुम्हारे जो करना है, वो कर लेना, मेरा व मेरे पिता का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तुम्हें जहां, जिसको शिकायत करनी है, कर लो, जिसको ज्ञापन देना है, दे दो। यह काम बंद नहीं होगा। इस पर पुस्तक विक्रेता संघ के प्रतिनिधियों ने जिला कलक्टर को ज्ञापन देकर प्रारंभिक जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में आरटीई शाखा में कार्यरत प्रांजलसिंह झाला को हटाने की मांग की गई। इस पर मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा उसे प्रारंभिक जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय से हटा दिया। इसके बावजूद कुछ दिन फिर उसी जगह कार्य किया जा रहा है।

प्रशासनिक अधिकारी से जांच की मांग

पुस्तक विक्रेता संघ द्वारा जिला कलक्टर को ज्ञापन देकर कम्प्यूटर प्रांजलसिंह झाला पर लगे आरोपों की जांच प्रशासनिक अधिकारी से करवाने की मांग की गई थी। इसके बावजूद शिक्षा विभाग के ही अधिकारी नारायणसिंह चुंडावत व नारायणसिंह राव को जांच करने की जिम्मेदारी सौंप दी, जिनके द्वारा एक माह बाद भी कोई जांच रिपोर्ट मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी को नहीं दी गई है। उल्लेखनीय है कि प्रांजल के पिता भी वरिष्ठ शिक्षा अधिकारी है। इससे शिक्षा विभाग के साथ ही प्रशासनिक कार्यप्रणाली सवाल खड़े हो रहे हैं।

मोबाइल कॉल डिटेल से कराओ जांच

कलक्टर को दिए ज्ञापन में कम्प्यूटर ऑपरेटर प्रांजलसिंह झाला की भूमिका की जांच उसके मोबाइल नम्बर व प्रारंभिक शिक्षा कार्यालय के बेसिक फोन की कॉल डिटेल से करने की मांग की गई। कॉल डिटेल से वास्तविकता सामने आ जाएगी। शिक्षा विभाग में संविदा पर कार्यरत होने के बावजूद शहर में संचालित उसकी स्टेशनरी दुकान से ही पाठ्यपुस्तकें व शिक्षण सामग्री खरीदने के लिए निजी स्कूल संचालकों को बाध्य किया जा रहा है। इससे आरटीई नियमों की भी धज्जियां उड़ रही है।

जांच दल को ऑडियो सीडी सौंपी

शिकायत के बाद जांच दल के अधिकारियों द्वारा शिकायतकर्ता से ठोस तथ्य मांगे गए। इस पर पुस्तक विक्रेताओं द्वारा कम्प्यूटर ऑपरेटर द्वारा निजी स्कूल संचालकों को डराने, धमकाने व उसकी दुकान से ही पुस्तकें खरीदने की ऑडियो रिकॉर्डिंग की सीडी भी उपलब्ध करवा दी गई। उस ऑडियो रिकॉर्डिंग की जांच दल द्वारा जांच की जा रही है।

हटा दिया था, मगर तकनीकी कार्य वही कर सकता है, इसलिए वापस भेजा

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी मधुसूदन व्यास ने बताया कि प्रांजल व देवेन्द्र उनके कार्यालय में ही कार्यरत है, मगर प्रारंभिक शिक्षा कार्यालय के आरटीई शाखा में जरूरत होने पर प्रांजल को लगाया गया था। जैसे ही यह शिकायत आई, तो उसे वहां से हटाकर मूल जगह लगा दिया। प्रारंभिक शिक्षा कार्यालय में जरूरी तकनीकी कार्य होने की वजह से उसे वापस भेजा है, मगर वह कार्यरत यही है। अब आरटीई में दूसरे कार्मिक को लगाने का कार्य प्रारंभिक जिला शिक्षा अधिकारी का है और वे ही अपनी व्यवस्था करेंगे। प्रकरण की जांच रिपोर्ट अभी तक नहीं आई है। जैसे ही जांच रिपोर्ट आएगी, तो उसी आधार पर अग्रिम कार्रवाई की जाएगी। जांच होने में करीब सात दिन का समय और लगेगा।

शिकायत का तो मुझे नहीं पता, जरूरी कार्य होने पर बुलाया था ऑपरेटर को

जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक सोहनलाल रेगर ने बताया कि आरटीई में कम्प्यूटर ऑपरेटर प्रांजलसिंह के खिलाफ शिकायत क्या है, उसकी विस्तृत जानकारी मुझे नहीं है। पहले उसे रिलीव भी कर दिया था, मगर आवश्यक कार्य होने की वजह से सीडीईओ सर से बात कर वापस बुलाना पड़ा। सुभाषजी से पूछकर जल्द कार्य पूर्ण कर उसे वापस रिलीव कर दिया जाएगा।

इधर, जिस कम्प्यूटर ऑपरेटर पर अनैतिक दबाव का आरोप लगा, उससे बात करने का प्रयास किया गया, मगर मोबाइल ही स्वीच ऑफ होने से बात नहीं हो सकी।

"SHREE"
Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101
धमाका ऑफर
लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....
ब्राण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में
ब्राण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

Overthinking-The Dangerous Surfing Dear Reader

It's a great opportunity to talk to you through JAIVARDHAN magazine. Thank you all for your affection and motivation to keep on writing. Your feedback is valuable. My subject for this month is 'Overthinking' which has really affected people of all ages. Thinking about him/her, this/that, past or future and we tend to miss out the present moments in our hands. Past is gone, future has not yet arrived but our present can make our future for sure. Enjoy reading.

When you drive on roads, you see speed breakers and turns which keep on reminding you to control your vehicle's speed. When you walk through a house there are doors and walls to show the directions. But there is no absolute hindrance once you immense yourself in your thoughts. It's your world & you are the king and so you think what you wish to. The way you surf internet, scroll through Facebook or Instagram you surf your thoughts as well.

It is psychological to habitually worry more and hence incline towards negativity. Such minds and mentality keep on adapting some negative thoughts from either an influential person or any happening going around and keep themselves engaged.

When you have a balanced diet, it enhances your health but if you eat in access, it has adverse repercussions that leads to a bad health. A normal sleep of 8 hours daily helps you to remain active both physically & mentally but over sleeping may end up creating various ailments. Over thinking is equivalent

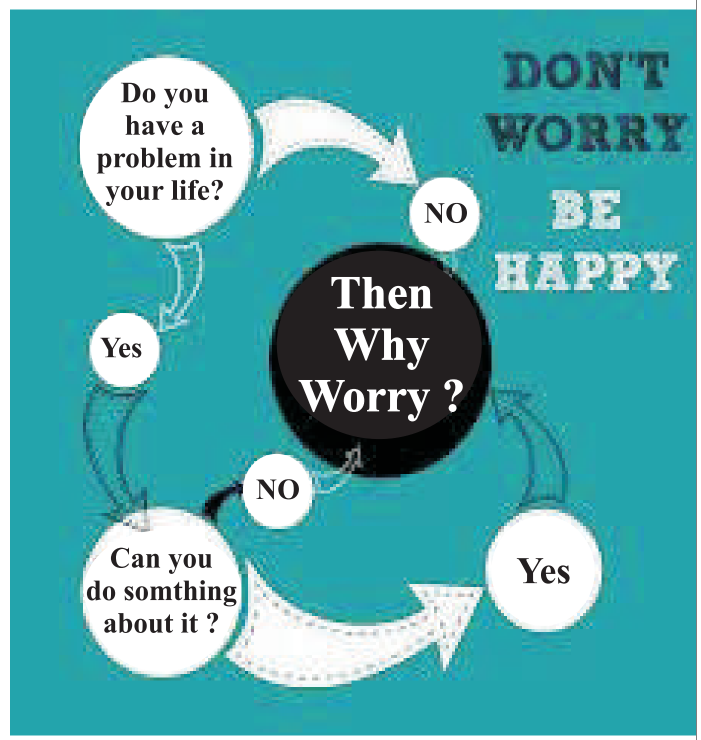

to over dosage of medicine which can definitely harm to your health even if it is prescribed by a doctor hence you need to put speed breakers and turns to avoid overthinking.

When you are too much into your mental world you actually skip your acts. When you face something unfavourable or undesired, actually your actions are required and not sitting passive and thinking on why and what if? Overthinking is something abnormal which is going on inside willingly and leads to different mental, physical and health issues.

Overthinking consumes your energy, wastes your important time and hinders you to pick up better decisions. It also ties you up to a rope that is connected to the pole of same thought which goes on in the circle for day and night and that leads to anxiety, worry and lack of inner peace.

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

What happens when you think too much-

- You can't stop thinking about a person, situation, happening or a problem you are facing.
- Instead of looking for a solution, taking an initiative and working, you just keep on thinking and don't get out of this surfing.
- Everybody faces ifs and buts in the life but when you think about the worst part of the happening and keeps it up, it is over thinking.
- You keep on slipping every now and then into negative thought process.
- You worry about mistakes made in past, current issues and negligible problems.
- You blame people around and torture yourself with negative thought process.
- You think beyond the reality, imagine the worst part with a big IF in your mind.
- You keep yourself away from the facts and ground.

How to cope up with Overthinking-

- Focus on finding out the solution and not making the problem complicated.
- Face the situation boldly and don't just seek sympathy in the name of situation.
- Read good books and serve good thoughts to your brain.
- Engage yourself in working instead of thinking because time remains important.
- Talk to people around you on different subjects.
- Avoid making things complicated and don't try to see things beyond your limits.
- Perform Yog.
- Be positive.
- Write down your worries on a piece of paper and fly it high in the sky.

Overthinking is not something natural which is out of your control but is surfed knowingly and willingly so you can also stop it willingly. Provide constructive thoughts to your brain and engage your mind and body both in working.

Life is not a straight line and so enjoy the ups and downs of this journey and be grateful to all around and Almighty. Having problem is common, getting solution is also common. The time today will change is the fact as well.

Remember, the loser is not the one who loses but the one who doesn't try to win. You will always get a way if you are trying. The beautiful lines communicate-

कोई भी लक्ष्य मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं,
हारा तो वो है, जो शिद्दत से चला ही नहीं।

See you soon with a new subject.

Manisha Lashkari
Principal
SMART STUDY
INTERNATIONAL SCHOOL,
Nathdwara

अन्तर्जातीय विवाह में बेहतर दाम्पत्य संबंध पर चिंतन जरूरी

आइए तलाशें आधुनिक समाज में अन्तर्जातीय विवाह के मायने

सभी समाज में निरन्तर बढ़ते जा रहे अन्तरर्जातीय विवाह संबंधों के कारण भविष्य के खतरों और संभावनाओं पर बहस प्रारंभ हो चुकी है। क्या यह परिवार के बड़ों का बच्चों पर खत्म होते जा रहे नियंत्रण का परिणाम है? क्या यह किसी भी समाज में लैंगिक सन्तुलन गड़बड़ाने के कारण है, क्या यह युवा पीढ़ी को जाति बंधनों के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल है, क्या यह भारतीय समाज समाज के एक और बड़ी तथा नई दुनिया की ओर हाथ बढ़ाने की दिशा में एक कदम है या सामाजिक संगठनों के भीतर की दीवारों के दरकने का संकेत है?

निसंदेह चिंतन की वजह जो भी रही हो, शिक्षा के पर्याप्त अभाव में परम्परा, इतिहास, ज्ञान विज्ञान में स्वयं को अन्य की तुलना में श्रेष्ठ समझने का अहं एक ओर हमें अपने ही बनाए चक्रव्यूह से बाहर नहीं आने देता। दूसरी ओर कभी कभी तथाकथित सामाजिक क्रांति या भावावेश में लिए गए निर्णयों को जबरन समाज के सामने जस्टिफाई करने के जोश में युवा पीढ़ी के बहकते कदमों को वे खुद एक नई पहल का नाम दे देते हैं।

प्रश्न यह है कि इन अन्तर्जातीय विवाह संबंधों से समाज को और भी सशक्त बनाने के लिए हमारी पूर्व तैयारी क्या हो, मार्गदर्शी बुजूर्गों की भूमिका क्या हो? दोनों पक्षों के अभिभावकों को ऐसी स्थितियां उत्पन्न होने के साथ ही परस्पर संवाद और दोनों ही परिवारों की इन संबंधों के प्रति सहमति का वातावरण तैयार करना उनका पहला दायित्व बनता है। बच्चों के निर्णय को सामाजिक स्वीकृति देने और उससे भविष्य के लिए स्थायी समझ की परिस्थितियां बनने पर ऐसे वैवाहिक संबंधों की खुशबू एक पृथक प्रभाव छोड़ेगी- ऐसा विश्वास है। प्राय: देखा यह गया है कि इस प्रकार के विवाह संबंधों के कारण प्रभावित परिवारों का अन्य जाति, कुटुम्ब, परिजन से परस्पर व्यवहार कम होता जाता है और जब जैसे वे समझने लगते हैं कि ऐसे उनकी या उनकी हमें कोई जरूरत नहीं है।

इसे स्वयं समझने और फिर निरन्तर जुड़ाव के अवसर खोजते रहने की कोशिश भी दोनों पक्ष के माता पिताओं का दायित्व बनता है। ऐसा होने पर इन विवाहों से समाज में सद्भाव भरे वातावरण का विकास हो सकेगा और बच्चों को भी संबल प्राप्त होगा। अन्तर्जातीय विवाह के स्वस्थ और सामाजिक स्वीकृति से भरे स्वरुप को विकसित करने की दिशा में अब अभिभावकों को गंभीर हो जाने की आवश्यकता है। युवक युवतियों का अचानक सम्पर्क में आना, भावावेश में विस्फोट की तरह वैवाहिक संबंध में बंध जाना, माता–पिता की विवशता, गुस्सा, धमकी, कभी कभी हद से बाहर जाकर मारपीट, आपराधिक कदम भी और बाद में लेदेकर समझौते की राह। इस सारी बेढ़ंग प्रक्रिया में ऐसे दम्पती समाज का अंग नहीं बन पाते हैं, बल्कि मुख्य धारा से कट जाते हैं। यह एक प्रकार से सामाजिक जीवन में इन दम्पत्तियों का बहिष्कार है, जो एक सभ्य समाज के लिए अच्छा संकेत नहीं है। इन सभी परिस्थितियों में अन्तर्जातीय विवाह को सम्मानजनक मान्यता मिले, अनायास भावावेश में ले लिए गए निर्णय पर सजा के बतौर इन युवक युवतियों को समाज हेय दृष्टि से न देखें। **उदाहरणपूर्वक एक प्रकार से समाज में पुनर्वासित करने का सकारात्मक वातावरण बने, इसके लिए आवश्यक होगा कि–**

1. यह पड़ताल कर ली जाए कि इस प्रकार के संबंध बनने के पीछे दोनों ही पक्षों की नीयत क्या है ? आर्थिक सम्पन्नता को देख लड़के या लड़की का अपने माता–पिता की शह (या स्वयं के ही निर्णय से) से ऐसे रिश्तों को हवा देना भविष्य के लिए सुखद नहीं है। यदि ऐसे संबंध अपरिपक्व उम्र के आकर्षण से उत्पन्न होकर माता पिता की स्वीकृति बिना पनपते हैं, तो जिम्मेदार अभिभावकों को इन पर रोक लगानी चाहिए। यहां प्रभावी समझाइश ही एकमात्र तरीका है।
2. ऐसे संबंधों के औचित्य को हम तब नकार नहीं सकते, जब उम्र, योग्यता और सुविचारित पारिवारिक निर्णय के तहत बच्चों को यह स्वतंत्रता दी जाती है कि वे अपना मंच वृहत समाज में जाति, कुटुम्ब, की वर्जनाओं से ऊपर जाकर खोजे, उनके इस प्रयास में हर कदम घर के बड़े मार्गदर्शी बनकर खड़े रहे और तब ऐसे संबंध बनना सुनिश्चित हो जाता है, जिनकी उम्र लम्बी होती है। इन पंक्तियों के लेखक को लगता है कि अन्तर्जातीय विवाह

संबंधों की वे सारी वजहें, जिनका जिक्र प्रारंभिक पंक्तियों में किया गया है, के कारण परिवारों में ऐसा कदम उठाया जाए, तो वह उदार सामूहिक सहमति का होना चाहिए।
3. भारतीय सामाजिक संगठन की विशेषता यह है कि वह अनेक धर्म, जाति, गोत्र, शाखा, प्रशाखा, पूजा व आचार पद्धतियों वाले समूह में विभाजित है। हर समूह अपनी जातिगत अस्मिता को बनाए रखना चाहता है। यह अच्छा भी है। क्योंकि एक विशेष काल, परिस्थिति और राजनीतिक, सामूहिक कारणों से सुविधापूर्ण स्थानों में आकर छोटे छोटे समूह बसे। समूह जिसे जाति के रूप में जाना गया कि स्थापना अपनी परम्परा व संस्कृति की रक्षा के साथ कुछ श्रेष्ठ मौलिक विशेषताओं की पहचान बनाए रखने के उद्देश्य से हुई थी। आज जब समस्त मानव समाज सिंगल अम्ब्रेला सिस्टम में एकजुट होने की ओर गतिशील है, तब अन्तर्जातीय विवाह संबंध समावेशी समाज व्यवस्था के गेटवे पर एक संभावना की नई राह खोलता है।

बहुत समझ बूझकर दाम्पत्य संबंधों के बीच नई सोच की इस हवा में सांस लेने का मानस बनाए– इस उम्मीद के साथ शेष सुधी पाठकों के लिए...।

डॉ. राकेश तैलंग
शिक्षाविद्, द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
मो. 94602-52308

"SHREE"
Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101
धमाका ऑफर
लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....
ब्राण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में
ब्राण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

जब शासक बनेंगे राष्ट्रभक्त, तभी आजादी की सार्थकता

समाज-देश के उत्थान में सहभागी बने, तभी स्वतंत्रता दिवस की सार्थकता

आधुनिक युवा पीढ़ी को समाज, गली-मोहल्ले, शहर व देश के उत्थान से शायद कोई सरोकार नहीं रह गया है। तभी आज मुझे लगा कि स्वतंत्रता दिवस मनाना सिर्फ एक औपचारिकता रह गया है। खास तौर से युवाओं को यह समझना होगा कि आखिर हम स्वतंत्रता दिवस क्यों मनाते हैं और क्या मायनें? आज शासक भी वोट भक्त होकर रह गए हैं, जबकि उन्हें राष्ट्रभक्त होना चाहिए। इसके लिए युवा पीढ़ी को आगे आने की जरूरत है, तभी यह बदलाव संभव है।

युवा पीढ़ी को पीछे मुड़ देखना होगा कि हमारा देश वर्षों तक गुलाम क्यों रहा? विदेशी आयातित हमारे यहां व्यापार करने आए, जिन्होंने हमारी कमजोरी को समझकर यह प्रयास किया कि यहां के लोगों को किस तरह आपस में लड़ाया जा सके। इसके लिए उन्होंने फुट डालो राज करो की नीति अपनाकर धीरे धीरे यहां के लोगों को अपने चंगुल में फंसा कर रोजगार एवं शासन का प्रलोभन देकर अपने साथ मिला। उन्होंने शासन करना प्रारंभ कर दिया। अतिथि को सत्कार देना भारतवासियों का हमेशा ही कर्तव्य रहा है। उसी का परिणाम रहा कि वह एक दिन इस देश पर शासन करने में कामयाब हो गए। धीरे धीरे जुर्म करने पर आमदा हो गए, लेकिन इस देश का युवा इस जुर्म को सहन नहीं करने का संकल्प ले चुका था, जहां सुभाषचंद्र बोस, मंगल पांडे्... आदि जैसे अनेक क्रांतिकारी आगे आकर संघर्ष करने लगे। जनता भी उनका साथ देनी लगी। विदेशी अंग्रेजों ने उन पर अत्याचार कर फांसी के फंदे पर लटका दिया, किन्तु इस देश का युवा न टूटा न झुका। हंसते हंसते मातृभूमि के लिए लिदान न्यौदावर कर दिया, जिसका असर पूरे देश पर पड़ा। अंग्रेज घबराने लग गए कि अब भारत का नौजवान सड़क पर आ गया है। उन्होंने हथियार डाल अपना सामान समेटने में लग गए, लेकिन जाते जाते उन्होंने फुट डालो राज करो की नीति अपनाते हुए भारत के दो टुकड़े कराने में सफल हो गए। शासन ऐसे हाथों में छोड़कर चले गए, जिन्होंने भविष्य में देश सर्वोपरि न समझ कुर्सी सर्वोपरि समझ राज करना प्रारंभ कर दिया। कुछ नेताओं ने भारत के टुकड़े करने का विरोध भी किया, किन्तु कुर्सी के लोभियो ने उन्हें नजर अन्दाज कर दिया। बड़े संघर्ष के बाद हम गुलामी से आजाद हो गए। वह दिन था 15 अगस्त 1947, जिसे आज हम स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाते हैं।

देश को आजाद होने के बाद इस देश को खुशहाल देश होना चाहिए था, किन्तु जिन महापुरुषों ने अपना बलिद ान देकर विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र को कायम कर संविधान का निर्माण कर हमें एकता एवं अखंडता का सपना संजोया, क्या हम उस पर खरे उतरे?

देश पर शासन करने वालों ने अपनी कुर्सी को स्थायी रखने के लिए राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय भावना को प्राथमिकता दिए बगैर केवल वोट प्रेम रख कुर्सी बचाने का प्रयास किया, जिससे वर्षों तक राष्ट्र भावना से ओत प्रोत शासक को अवसर नहीं मिला। इसके कारण देश में जातिवाद, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, आतंकवाद, पापाचार, व्याभिचार ने अपने पैर बढ़ाने शुरू कर दिए, जिसके कारण देश में फिर से अशांति का वातावरण बनने लग गया। गन्दगी व ओछी राजनीति ने भाई भाई को, पिता पुत्र को, पति- पत्नी को, भाई बहन को आपस में बंटने को मजबूर कर दिया, जिससे देश फिर एक बार स्थानीय गुलामी की शरण में जाने लगा।

राजनीतिज्ञ लोग अपनी कुर्सी बचाने के चक्कर में देश हित में निर्णय न लेकर वोट हित में निर्णय करने लगे, जिससे हर तरफ समस्याओं का अंबार लगने लगा। ठोस निर्णय नहीं ले पाने के कारण आज आतंकवाद ने अपने पैर पूरे देश में पसार दिए, जिस कारण आतंकवादी जब चाहे, जहां चाहे बम विस्फोट जैसी घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं और तो और संसद को भी नहीं छोड़ रहे हैं। शासकों द्वारा देश हित में निर्णय नहीं लेकर वोट हित में निर्णय लेने के कारण भारत को कई युद्धों का सामना करना पड़ा, जहां देश की सेना ने मुंह तोड़ जवाब दिया और भारत विजय हुआ। फिर भी आंतरिक आतंकवाद से निबटने के लिए शासकों ने सेना को खुली छुट नहीं दी, जिसकी वजह से आतंकवादियों ने अपने पैर पसार दिए, जो नासुर बन चुका है। दूसरी ओर शासकों को वोटो के कारण जहां फायदा नजर आया, उसी राज्य का, जिले का, तहसील का, पंचायत का व नगर का विकास किया। जहां से वोट नहीं मिले, उनको नजर अंदाज कर दिया गया।

हालात यह है कि देश में शासक का आदेश मानना ही प्रशासन के अधिकारी अपना कर्तव्य समझते है, चाहे वह संविधान के अनुरुप हो या न हो। अगर वह नहीं माने तो उसे काबिल नहीं मान अच्छे स्थान पर नहीं लगाया जाता है। कुछ जनहित के कार्यों में शासक के आदेश फाइलों में दफन कर रखना भी प्रशासनिक अधिकारियों का माना जन्म सिद्ध अधिकार है। ऐसे मामलों में तो न्यायपालिका के आदेश की भी परवाह नहीं करते।

आज देश में वह व्यक्ति, अधिकारी, कर्मचारी ही सुखी है, जो राजनेताओं के चाटुकार बन जी हजुरी में लगे हैं। इसी कारण आज बेईमान, लूचा, लफंगा, चाटुकार खुले में घुम अपनी दादागिरी जमा रहे हैं, जिसके कारण ही देश में जातिवाद, साम्प्रदायिकवाद, स्वार्थवाद, भ्रष्टाचारवाद, अनैतिकवाद, आतंकवाद हावी हो रहा है। इसके कारण देश की एकता एवं अखंडता को खतरा पैदा हो रहा है, जिस कारण कहीं यह देश पुन: गुलाम न बन जाए। आज के दिवस पर युवाओं को चिंतन करना होगा व संकल्प लेना होगा कि हमें इस तिरंगे को झुकने नहीं देना। देश के दुश्मनों को करारा जवाब देना होगा, ताकि वोटो के लालची देश को गुलामी की राह पर न ले जा पाए। युवाओं को जागना होगा, राजनीतिज्ञों को दलीय हित में न सोचकर देश हित में साचने वाला बनना होगा।

आज का युवा अब जग चुका है, वह दलहित नहीं, राष्ट्र हित को साचने वाले को शासन सौंपने जा रहा है। करगिल व पुलवामा की घटना के बाद युवा में देशभक्ति की भावना जागी है और उसने ऐसे शासक को चुना जो राष्ट्रहित के बारे में सोचता है। आज इस देश को यह गर्व महसूस हो रहा है कि हमने राष्ट्र भक्त जो राष्ट्र को सर्वोपरि समझता है, उसे शासन की बागडोर संभलाई। इस कारण आतंकवाद का सफाया हुआ। जम्मू-कश्मीर से धारा 371 हटाना और लद्दाक को विशेष केन्द्र शासिक राज्य गठन आजादी के बाद बड़ा फैसला है। वाकई मौजूदा सरकार का यह कदम प्रशंसनीय है। देश हित में आमजन को जोड़ते हुए समग्र विकास की राह पर आगे बढ़ना ही सरकार का ध्येय होना चाहिए। तभी विश्व में भारत पुन: विश्व गुरू बनने का सपना पूरा हो सकता है। हिन्दुस्तान का जन जन निम्न पंक्तियों को अपने जीवन में उतार दें, तो हमारा देश अखंड भारत के साथ पुन: विश्वगुरु बन सकता है-

कर्तव्य मानव का श्रृंगार बन जाए,
निस्वार्थ जन सेवा हृदय का प्यार बन जाए,
श्रम मनुष्य की आस्था का आधार बन जाए,
तो जिन्दगी इंसान का त्यौहार बन जाए।

रोशनलाल टुकल्या
समाजसेवी व पत्रकार
रेलमगरा 94149-27728

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से
आप जयवर्द्धन
मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं
वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।
भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

मां की दखलंदाजी से घर में कलह

मां को जाने क्या क्या कहा जाता है। भगवान तक का दर्जा दे दिया जाता है। ये भी कहते हैं कि पूत कपूत हो सकते हैं, पर माता कुमाता नहीं हो सकती। बच्चों के लिए सुखद अहसास का नाम है मां। पर वही मां चाहे वो लड़के की हो या लड़की की हो, जिसे अपने बच्चों की खुशी के अलावा कुछ सूझता नहीं। जो सपने में भी बच्चों को दु:ख देने का नहीं सोच सकती, वो अपने बेटे या बेटी के घर उजाड़कर उनके जीवनभर के दु:ख का कारण कैसे बन सकती है? हां ऐसा हो रहा है, पति पत्नी के रिश्तों में कलह की वजह मां की दखलंदाजी होती है, चाहे वो लड़के की हो या लड़की की। पर मैं कहूंगी जो अपने बच्चों के रिश्तों में खटास डाले वो मां नहीं होती, बल्कि एक ऐसी औरत की असुरक्षा की भावना होती है, जो उसके किसी विकार या मनोबल की कमी से उपजी होती है। आप गौर करिएगा हर मां को अपने बच्चों के लिए हमेशा प्यार रहता है, पर व्यक्तिगत तौर पर वो या तो अंहकारी, क्रोधी, उपेक्षित या इसी तरह के किसी विकार से ग्रसित होती है और तभी असुरक्षा या कुंठा की भावना पनपती है।

हालांकि इसकी वजह पुरूष प्रधान समाज ही है। कुछ वर्ष पहले तक महिलाएं घर की चारदीवारी तक ही सीमित थीं। उन पर बच्चों को अच्छी परवरिश देने का दबाव बनाते थे। बार बार उसे समझाया व दबाव बनाया जाता था कि तुम्हारी दुनिया बच्चों तक ही सीमित है और मां बच्चों को अपनी दुनिया समझते हुए उन पर अपना जीवन वारते हुए त्याग करते हुए उनमें अपनी सारी खुशियां ढूंढते हुए कब उन पर मानसिक रूप से आश्रित हो जाती थी, पता ही नहीं चलता था और जब बच्चों का विवाह हो जाता है और वो अपनी मां को छोड़ कहीं और व्यस्त होते हैं, तो मां को मानसिक असुरक्षा होने लगती है। उन्हें बच्चों के जीवन में उनकी महत्ता कम होने की चिंता, उन्हें दखलअंदाजी करने को मजबूर कर देती हैं। दूसरी वजह है अविश्वास। मां कभी अविश्वास नहीं करती, पर कुछ कटु अनुभव, कुछ समसामयिक घटनाएं उसको अपने बच्चों के प्रति चिंतित कर देते हैं और अविश्वास इतना बढ़ जाता है कि फिर अपने बच्चों के जीवन साथी पर भी भरोसा रहता, ना ही अपनी औलाद पर कि वो सब संभाल लेंगे, और दखलंदाजी हो जाती है। कुछ मां जो दर्द खुद झेल चुकी होती हैं, उससे उनको बचाने के लिए हिदायत देने की कोशिश करती हैं और दखलंदाजी हो जाती है। सब बातों में असुरक्षा की भावना जुड़ी है, पर अब वो दौर खत्म हो रहा है। नई पीढ़ी अपने पैरों पर खड़ी और मानसिक रूप से परिपक्व है तथा अपने मनोबल को ऊंचा रखने में भी कार्यरत हैं, तो ऐसी पीढ़ी की मां ना तो कुंठित होंगी, ना मानसिक रूप से असुरक्षित। तो उन्हें रिश्तों को सहजता से लेने में आसानी रहेगी और उनकी परिपक्वता एक दूसरे को समझने में मदद करेगी और हर परिस्थिति का सामना करने में सक्षम करेगी। फिर किसी मां पर दखलअंदाजी करने या घर तोड़ने का इल्जाम नहीं होगा।

मेरी गुजारिश है, उन माताओं से भी हम अपने उन निजी कमजोरियों को त्यागें, जो हमारी ममता पर दाग लगाते हैं। वहीं गलतियां ना दोहराएं जो हमारे बड़े करते आए हैं। हम बचपन से सुनते आए थे ससुराल जाकर तुम्हें ये करना पड़ेगा, ये रीत है, तुम्हें सहना पड़ेगा, ये सब बातें मन को झुंझलाने का काम करती हैं और रिश्तों में बोझिलता का अहसास कराती है। जिसकी वजह से संबंधों में आत्मीयता नहीं रहती। हर रिश्ते को निभाने के लिए आपसी समझ, प्रेम और समर्पण की जरूरत होती है, चाहे खून का हो, दोस्ती का हो या ससुराली।

हम हर रिश्ता तो खुशी से निभा लेते हैं, पर ससुराली रिश्ते हमें अनमना कर देते हैं, वजह है दबाव में रहना। हमें अपने बच्चों को रिश्तों को दबाव से अपनाने के बजाय सहजता से अपनाने के लिए सम्बल देना होगा। यकीन मानिए आजकल के बच्चे बहुत परिपक्व हैं, बस उन्हें शक्ति और प्रोत्साहन देने की जरुरत है। इसके लिए हमें भी अपनी ममता को कमजोरी नहीं, बल्कि निश्छल प्रेम की ताकत बनाकर बच्चों पर बरसाना चाहिए, ताकि हम एक दूसरे पर आश्रित न होकर एक दूसरे को सार्थक जीवन जीने में मदद करें।

नीलिमा शर्मा
राजसमंद

खुशी के पल

जिन्दगी का सच : ऐसा पुनीत कार्य कर जब प्रफुल्लित हो जाता है मन

इंसानियत, मानवता, इंसान से साक्षात्कार कराने का एक ऐसा दृष्टिकोण है, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को बदल कर रख देता है। कड़ी धूप में किसी राहगीर को ठंडे पानी की बोतल से पानी पिलाकर उसकी राह को आसान बनाने की बात अगर दिल में उठे और वहीं हम करके मन को तसल्ली देने का मन बना ले, तो सच में बहुत कुछ पल हमारे सुकून में बदलते हुए हमें नजर आने लगेंगे।

सरकारी अस्पताल में किसी बुजूर्ग को देखकर उसके पास जाकर अगर प्यार से पूछ लिया जाए, बाबा आप यहां किसी से मिलने आए हैं या किसी डॉक्टर को दिखाने आए हैं। अगर आपके साथ कोई नहीं है, तो मैं आपकी मदद के लिए तैयार खड़ा हूं। आप अपना नाम बताएं, मैं अभी पर्ची कटवा के लाता हूं और आपकी बीमारी से संबंधित डॉक्टर के चेंबर तक मैं आपको छोड़कर आता हूं। अगर आप ऐसा करते हैं, तो यह पल भी आपके जीवन में बदलाव जरूर लेकर आएंगे और अगले ही पल आप अपने आप में खुश होते हुए नजर आएंगे।

खचाखच भरी हुई बस के अंदर आप जब अपनी सीट पर आराम से बैठे हुए अपने सफर को तय कर रहे हैं और अगले ही स्टॉप पर आपको किसी गर्भवती स्त्री को उसी बस में चढ़ते हुए देखते हैं, वो अपनी बेबस आंखों से पूरी बस को एक ही नजर में देखकर एक गहरी लंबी सांस लेती हुई नजर आती है और उसी पल आप उससे कहते हैं, बहन आप मेरी जगह बैठ जाइए। मुझे तो बस पास ही जाना है, आप इत्मीनान से यहां बैठ जाइए। एक हल्की सी मुस्कुराहट आप दोनों का सफर बहुत ही अच्छा और सुकून वाला बना देगी। यह दो पल की खुशी आपके चेहरे की रौनक जरूर बढ़ा देगी।

जब आप रिक्शे में बैठते हैं और कहते हैं, भैया मुझे वहां जाना है, रिक्शावाला आपको वहां ले जाने के लिए तैयार हो जाता है। रास्ते में हो सके तो उससे कुछ बातें कीजिए, उसका हालचाल पूछिए, उसकी प्रॉब्लम के बारे में पूछिए। अगर आप उसके साथ एक दोस्त की तरह व्यवहार करेंगे, तो सच में उसके लिए वो पल सुकून वाले होंगे, उसकी दिनभर की थकान एक पल में दूर हो जाएगी। जब वह घर जाएगा, तो अपने बीवी बच्चों के साथ वह बहुत ही सहज भाव से व्यवहार करता हुआ नजर आएगा। क्योंकि उसे उस दिन आपका प्यार मिला है।

किसी बेबस, बेसहारा और लाचार इंसान की जब आप मदद करते हैं, तो वह पल आपकी जिंदगी के सबसे अच्छे पलों में शुमार होने लगते हैं। आप अपने आप ही खुश होते हुए नजर आने लगते हैं, इंसान की खुशी आज सबसे कीमती हो गई है। वह कितना भी धन क्यों न कमा ले, कितनी ही शोहरत क्यों न पा ले, कितना ही नाम क्यों ना कमा ले, लेकिन उससे खुशी नसीब नहीं हो पाती। वह कुछ खालीपन लीए हुए जिंदगी को ढोता हुआ नजर आता है, लेकिन किसी की मदद के कुछ पल आपकी जिंदगी को खुशियों से जरूर भर के रख जाती है। इसलिए अगर आप खुश होना चाहते हैं, तो किसी की खुशियां बनने की कोशिश कीजिए।

राहुल दीक्षित RD
काव्य गोष्ठी मंच राजसमंद

सुभाषचन्द्र बोस के साथ हुआ भूतगिरीजी बावजी का सत्संग!

भारतीय संस्कृति अद्भुत और अद्वितीय है। सदियो से भारत में विभिन्न पंथ और धर्म का प्रभाव जनमानस पर रहा है। योगी, जोगी, यति, साधु, सन्त, फकीर इस भारत भूमि पर जन्म लेकर आते रहे हैं और आते रहेंगे और समाज को आध्यात्मिक दृष्टिकोण देते रहेंगे। मनुष्य का जीवन वैसे तो चार स्तम्भों पर टिका है- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। ये हमारी सनातन संस्कृति का आधार भी है।

सतयुग, त्रेता, द्वापर से चलते हुए मानव सभ्यता कलयुग तक पहुंच गई है, मगर अवतारी पुरुषों, साधु, सन्तो का आगमन निरन्तर समाज को सत्य का मार्ग बताने के लिए हो रहा है। संत का अर्थ ही सज्जन पुरुष, साधु अर्थात साधक जो सात्विक गुणों को धारण कर सत्य मार्ग पर चलने वाला, जो जाति धर्म सम्प्रदाय से मुक्त होता है।

कहते हैं कि जात ना पूछो साधु की, वो व्यक्तिगत रूप से किसकी साधना करते, ये बात अलग है, मगर मानवहित, मानवधर्म, सनातन और प्राकृतिक नियमों के प्रति वो लोगों को जागरूक करते हैं। एकान्त में वे निरन्तर चिंतन में रहते हुए कुरीतियों से पहले खुद को मुक्त करते हैं। फिर समाज को बताते हैं कि कुरीतियां त्यागने में ही भलाई है, साधु, पुरुष समाज का सच्चा मार्गदृष्टा होता है और उसके बताए मार्ग पर चलकर मोक्ष की तरफ बढ़ा जा सकता है। तपस्वियों ने यह शिक्षा समाज को अपने नेक आचरण से दी है। आज हम बात करते **माटी का लाल कॉलम** में एक ऐसे ही तपस्वी सन्त के बारे में, जिन्हें उनके भक्त साक्षात महाकाल महादेव का अवतार मानते हैं, जो सोनियाना वाले बावजी के नाम से भी विख्यात है।

पंकज ठाकुर द्वारा संकलित आपकी जीवनी की पुस्तक सद्‌गुरू देव श्री भूतगिरी जी बावजी में लिखा है कि बाबा भूतगिरी जी बावजी न कभी जन्में, न कभी जिनकी मृत्यु हुई। उन्होनें तो बस इस पृथ्वी की यात्रा कब से शुरू की, यह कोई नहीं जानता। हां यह लौकिक यात्रा 25 अगस्त 2001 को समाप्त हुई। वैसे परम सद्‌गुरू भूतगिरी जी बावजी का जन्म मेवाड़ के उदयपुर ज़िले में चीरवा गांव में मेनारिया ब्राह्मण परिवार में हुआ, पर बावजी अपने जीवन का प्रारम्भ साधु जीवन से ही मानते हैं।

उन्होनें अपने श्री मुख से बताया कि उनके जीवन का प्रारम्भ व अन्त एवं प्रथम और अन्तिम उद्देश्य इनके गुरुदेव अखण्ड अविनाशी श्री चैतन्य गिरी जी बावजी ही है। उनकी आज्ञा के बिना वो एक कदम भी नहीं चल सकते हैं। चैतन्यगिरी जी का आश्रम भारत के विभाजन के पूर्व कश्मीर में महेन्द्रबनी टोपाहिल पर स्थित था। बावजी वही शिष्य बनकर गुरुसेवा में रहा करते थे। बावजी श्री नगर स्थिति दशानमी अखाड़ा से निकले हुए परम संत थे। बावजी स्वयं परमसिद्ध एवं पूर्ण योगी होते हुए भी भक्ति मार्ग को हमेशा श्रेष्ठ मानते एवं निष्काम भक्ति करने का संदेश दिया करते थे।

बावजी ने बताया कि उन्होनें कभी किसी को अपना शिष्य नहीं बनाया, लेकिन इनके हजारों भक्त है, जो इनके रमणीय काल में बिताए विभिन्न आश्रमों में आज भी आते हैं। उन्होंने भारत में 53 आश्रमों में वास किया, जिसमें प्रथम कश्मीर में महेन्द्रगढ़ के पास सुन्दरबनी है। दूसरा गढ़गिरनार कमण्डल कुण्ड है, जहां अखंडज्योति लगी रहती थी, इसलिए इसका नाम अखंड धूना है। यह स्थान भगवान दत्तात्रेय की गादी के रूप में भी विख्यात है। गुरुदेव नागा साधु की परमहंस श्रेणी में आते थे, इनके नागा साधुओं के इष्टदेव दत्तात्रेय है।

बावजी ने बताए गए आश्रमों में औंकारेश्वर का भी प्रमुख स्थान है। चुंकि गुरुदेव शिव भक्त थे। उन्होंने साधु जीवन के भ्रमण कालीन दौर में काफी समय हठ योग में इस जगह बिताया था। गोधरा, खण्डवा, राजस्थान के निम्बाहेड़ा के पास टाकेश्वर महादेव नामक स्थान है, जहां कुछ समय हठ योग में रहे।

सुभाष चन्द्र बोस से बावजी का सत्संग

बावजी की जीवनी पुस्तक में पृष्ठ संख्या 38 पर लिखी रहस्यमयी जानकारी में किसी भक्त ने पूछा कि सुभाष चंद्र बोस वायुयान दुर्घटना में जिन्दा थे या उनकी मृत्यु हुई, जिस पर बावजी ने बताया कि सुभाष की मृत्यु नहीं हुई। उनका जहाज जल गया, मगर वो बच निकले थे, परन्तु उनके शरीर का काफी हिस्सा जल गया था। उन्होनें अपना इलाज अग्रेजों की नाक के नीचे कलकत्ता में रहकर ही करवाया, लेकिन किसी को भनक तक नहीं लगने दी कि वो कहां है। इस घटना के बाद उन्हें वैराग्य हो गया और साधु बन गए थे। अपने साधु जीवन काफी समय बोस ने हिमालय स्थिति शोलमारू आश्रम में रहकर बिताया था। यूं तो कई बार सुभाष चन्द्र बोस भ्रमणरत रहे, लेकिन उन्हें देख पहचानना मुश्किल ही था। ऐसे में एक बार घूमते हुए वो बावजी के सीतामहु (मध्यप्रदेश) स्थित आश्रम पर पहुंच गए, लेकिन उन्हें बावजी के अलावा कोई नहीं पहचान पाया था। जब बोस वहां पहुंचे, तो बावजी ने अन्य लोगों को वहां से जाने की आज्ञा दे दी। सभी भक्त वहां से चले गए। रात बारह बजे के करीब सुभाष चन्द्र बोस और भूतगिरी जी बावजी के बीच सत्संग हुआ।

बावजी का सोनियाणा आगमन

अगस्त का महीना था, सन् 1966 की बात है। रिमझिम बारिश हो रही थी, एक लम्बी सी कद काठी का साधु जिनकी लम्बी काली दाढ़ी, जटाए, काले वस्त्र पहने, हाथ में कमण्डल लिए रेल की पटरी पर चलते हुए दिन अस्त होते होते सोनियाणा गांव की तरफ पहुंचे। कुछ लोगों ने उन्हें देख नमन किया और चाय पीने की मनुहार की, तो गुरुदेव ने वहीं खाट पर बैठकर चाय ग्रहण की और उनसे पूछा कि यहां गांव में ठहरने की कोई जगह है। वहां भैरूजी का देवरा व सराय थी। बावजी रात्रि विश्राम के लिए यही ठहर गए। कुछ समय वहां रहे, बाद में भैरूजी के देवरे वाली सराय छोड़कर सामने पहाड़ी पर आकर धूनी रमाई थी।

इस स्थान पर कुछ भक्तों ने गुरुदेव के रहने के लिए छह पट्टियों की छत वाली कुटिया बनाई थी। सोनियाना आश्रम की महिमा इसलिए भी है कि 53 आश्रम में से सबसे अधिक समय 36 वर्ष बावजी ने यही बिताया। यह गांव राजसमन्द में कांकरोली से मात्र 9 किलोमीटर की दूरी पर पूर्व दिशा में हैं। आश्रम में गुरूपूर्णिमा, शिवरात्रि नवरात्रि, दीपावली के उत्सव भक्तजन बड़ी धूमधाम से मनाते थे। गुरुपूर्णिमा के दिन का बड़ा महत्व गुरुजी ने भक्तों को बताया कि इस दिन गुरु अपने शिष्यों के वर्षभर का लेखा जोखा देखता है कि उसने गुरु के द्वारा दिए बीजों को उगाकर दुगुना किया है या फिर ऐसे ही पड़े रहने दिए अथवा सड़ा दिए हैं।

भक्त को गुरु के द्वारा दिया गया गुरुमंत्र यदि उसने निष्काम भाव से भज लिया, तो वो जीवन का मूल मंत्र हो जाता है। भक्त के द्वारा किए उसके अच्छे बूरे कर्म ही उसकी कमाई बन जाती हैं। बावजी की जीवनी पढ़ते पढ़ते पाया कि बावजी का व्यक्तित्व चमत्कारों से भरा हुआ था, वो अपने आश्रम में आने वाले हर भक्त पर अपनी कृपा का प्रसाद लुटाते थे। सच्चा साधक वैसे भी ईश्वर के बहुत निकट पहुंच जाता है।

उनके श्री मुख से निकला हर वाक्य मंत्र बन जाता, जो भक्तों का कल्याण करता है। मैं उन्हें अपने शब्दों में लिखूं तो कहूं वो त्रिकालदर्शी थे। वो आने वाले भक्त की पीर उसके कहने से पहले ही समझ लेते और उचित समाधान बता देते थे।

आज भी भक्त उनके स्थान पर जाते हैं तो वैसी ही अनुभूति पाते हैं, जैसे बावजी के रहते पाते थे। जहां विज्ञान खत्म होता है, वहां से आध्यात्मिकता की शुरुआत होती है। भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिकता का चमत्कार अद्भुत है। बावजी एक बार अस्वस्थ हो गए, पूरा शरीर कमजोर पड़ गया। उन्हें अहमदाबाद के बड़े डाक्टर के पास ले जाया गया, तब जांच करवाई, जो रिपोर्ट आई। सभी डॉ. चकित थे, जो उन्होनें कहा कि चिकित्सा विज्ञान के लिए ये एक महान चमत्कार है कि एक व्यक्ति जिसे देखने से साफ लग रहा था कि यह गंभीर बीमार है और जो पिछले 48 घंटो से घोर कष्ट भोग रहे हैं, लेकिन डायग्नोसिस रिपोर्ट यह कह रही है कि यह व्यक्ति पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं तथा इनके शरीर की सभी जांचे इन्हें शारीरिक रूप से स्वस्थ बता रही है।

वास्तव में यह एक महान चमत्कार एवं अजीब अनुभव है हमारे लिए। इसके प्रत्यक्ष गवाह उनके अनन्य भक्त ओम शर्मा (रूई वाले) और श्याम दीक्षित और अन्य भक्तजन है। कहते हैं कि बावजी ने अपने शरीर को त्यागने का समय पहले भक्तों को बता दिया था। ये भी किसी चमत्कार से कम नहीं है, मगर सिद्ध पुरूषों के लिए ये साधारण बात है, अवतारी पुरुष हो। साधु हो, संत हो, देव पुरुष हो सभी को एक दिन जाना है। ये संसार मृत्यु लोक है।

सैनिक के बाद लिया सन्यास

वैसे बावजी की उम्र का सही आंकलन करना मुश्किल है, मगर प्रथम विश्व युद्ध में आपने सेना में सैनिक की भूमिका का निर्वाह किया। युद्ध समाप्ति के बाद सब छोड़ कर संन्यासी बन गए। सैनिक के रूप में बावजी का एक दुर्लभ फोटोग्राफ है। उसमें उनकी उम्र 24-25 की लगभग थी। 1914 में प्रथम विश्व हुआ। उससे जो उम्र गणना करने पर बावजी की उम्र 122 वर्ष थी। जब आपने सोनियाना आश्रम में तपस्या में लीन रहते 25 अगस्त 2001 में नश्वर शरीर का त्याग किया।

सोनियाणा गुरुजी का 52वां आश्रम था

चीरवा आश्रम 53वां आश्रम है। इसका भी अपना महत्व कम नहीं है। इस आश्रम की जमीन बावाजी ने अपने निर्वाण के 25 वर्ष पहले ही खरीद ली और घोषणा की थी कि ये मेरा अन्तिम आश्रम होगा। बावजी की समाधि यही बनी है। 31 अगस्त 2001 को त्रयोदशी पर जिस स्थान पर बावजी का अंतिम संस्कार किया गया, वहां ऑंकारेश्वर से शिवलिंग गुरूदेव के प्रिय भक्त अमर सरकार व उनके पुत्र मुन्ना बन्ना लाए और गुरूदेव की आज्ञा अनुसार प्राण प्रतिष्ठा की गई। आज भी भक्तजन इस स्थान पर जाते हैं। इस समाधी स्थल पर एक अस्थि कलश नीचे रखा गया था, जो इस बात का प्रतीक है कि गुरुदेव बावजी सदा के लिए यहां बिराजमान है। आज विशालकाय शिवमंदिर (भूतेश्वर महादेव) के नाम से यहां बन चुका है। गुरूदेव के हजारों भक्त दर्शन के लिए आते हैं और गुरुदेव की अनुभूति के अहसास का प्रसाद ले अपनी तकलीफ को उनके चरणों में छोड़कर आंनद का आशीर्वाद लेते जाते हैं।

ये मेरा भी सौभाग्य है कि महान संत श्री भूतगिरी जी बावजी के चरित्र पर कलम चलाने का अवसर प्राप्त हुआ। आपकी जीवनी मेरे जीवन की दशा और दिशा बदलेगी। इसी आशा के साथ मैं पुस्तक रूप में जीवनी को संकलित करने वाले स्व. पंकज ठाकुर को भी साधुवाद देता हूं। आपने ये पुण्य कार्य किया। आज बावजी और पंकज ठाकुर दोनों की आत्मा बैकुंठ धाम में है, मगर इस पुस्तक के माध्यम से पाठको और भक्तो के दिलों में राज कर रहे हैं। इस पुस्तक के कुछ अंश साभार लिखते हुए अन्त में मैं कबीरदास जी के दोहे से इतिश्री करता हूं।

गुरू गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दीयो बताय।।

कहा गया है कि आध्यात्म के जगत में सत्य ऐसे ही क्षणिक रूप में प्रकट होता है। यदि पात्रता हो तो पकड़ लो। अन्यथा ये क्षण फिसल जाता है। इन्सान के जीवन में सद्गुरु का अलग ही स्थान होता है। उनके बताए मार्ग पर हम सब चलते रहे। इसी कामना के साथ मेवाड़ की महान विभूति संत श्री भूतगिरि जी बावजी को कोटि कोटि नमन करता हूं।

प्रस्तुति

सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली
मो. 94146-21730

हिन्दी का जिन्न

अल्लादीन का नाम तो आप सबने सुना ही होगा? वही अल्लादीन जिसके पास बाबा आदम के जमाने का एक जादुई चिराग़ था, जिसे घिसकर जब चाहता, वह एक जिन्न प्रकट कर लेता और काम हो जाने पर फिर से उसे चिराग के भीषण अंधेरे गर्त में भटकने के लिए मजबूर कर देता। ऐसे मौकापरस्त और स्वार्थी लोगों से यह दुनिया खाली नहीं रही है। जब- जब जरूरत जान पड़ी है, तो कोई न कोई मुद्दा जिन्न निकाल लिया जाता है और काम होने पर फिर वह बैशाखनन्दन के सिर से सींग की तरह लुप्त हो जाएगा।

आने वाले सितंबर माह की चौदहवीं तारीख इतिहास की ऐसी घटना की याद को हर हिन्दुस्तानी के हृदय में ताजा कर देती है, जो कि जुबान से जुड़ी है। खाद्य प्रेमियों के लिए एक स्पष्ट कर दूं कि जबान का अर्थ केवल जीभ नहीं होता है, बल्कि जबान भाषा को भी कहते हैं। इसलिए मानसिक चटकारे लेना त्यागे और दिमाग के घोड़े दौड़ा दीजिए। हां तो बात हो रही थी चौदह सितंबर की। चौदह के अंक से हम भारतीयों का परिचय तो अनादिकाल से है, रत्नाकर को मथकर निकाले गए रत्न चौदह ही थे। भगवान राम को वनवास भी चौदह ही थी। पृथ्वी को बीच में मानकर इसके ऊपर चौदह तथा नीचे भी चौदह भुवनों की बात हमें ज्ञात ही है। समकालीन गंधर्व दिवस अर्थात 14 फरवरी को युवा पीढ़ी कैसे भूल सकती है। क्योंकि उसी दिन तो चौदह जन्मों (सात- सात दोनों के) के साथ की कसम चौदह सौ का गुलाब देकर लेते हैं। फिर वह कसम चाहे चौदह दिन भी न टिके।

बच्चों का बाल दिवस भी तो 14 नवंबर को मनाया जाता है। चौदहवीं का चांद किस को भला याद नहीं होगा? यानि चौदह के अंक से सभी भलीभांति परिचित हैं। बात निकली है, तो दूर तलक तक जाएगी। इसे ही कहते हैं, बात कर रहे थे, उस दिन की जब भारतीयों में अपनी भाषा के प्रति प्रेम फूटने की और कहां चौदह के फेर में फंस गए।

चलिए इसी बहाने कुछ पल जीवंत हो गए होंगे। 14 सितंबर अर्थात हिन्दी दिवस मनाया जाता है या यूं कहिए मनवाया जाता है। बड़े- बड़े मंचों पर बड़े- बड़े महानुभाव शोभित होकर हिन्दी के उत्थान की बड़ी- बड़ी बातें करते हैं, तो ऐसा लगता है कि अब कुछ कदम दूर है हिन्दी विश्व भाषा बनने से। कितने ही वाक्य कानों से टकराते हैं। हिन्दी हमारी मातृभाषा है, हिन्दी हमारी राजभाषा है। इसी आवेश में हिन्दी को राष्ट्रभाषा तक पहुंचा देते हैं, परंतु जब जांच पड़ताल की जाती है, तो पता चलता है कि जिस विदेशी भाषा को आजादी के बाद केवल दस वर्ष तक रुकने की छूट थी, वह 72 वर्षों से निरंतर टिकी हुई है और उसी की शरण में जाने पर हम घमंड का अनुभव करते हैं। यहां तक कि जिनके चूल्हे हिन्दी के कारण जल रहे हैं, उनके बच्चे भी पिताजी कहने में शर्माते हैं और आंग्ल आश्रमों (कान्वेंटों) में ईशु की शरण में नियमित जाते हैं। चौदह सितंबर को चिराग घिसकर हिन्दी के जिन्न को निकाल कर थोड़ी सी तारीफ करके फिर चिराग में बंद कर दिया जाता है और फिर प्रतीक्षा आने वाले साल की।

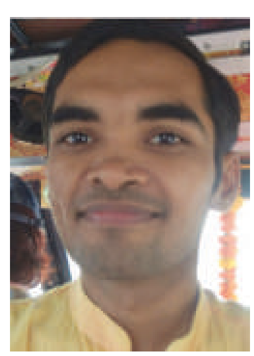

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग
जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय
चित्रकूट (उत्तरप्रदेश) 86041-12963

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूरी में रहते हैं गोविन्द

5 मई 1959 कांकरोली नगर के रेती मोहल्ले में श्री कल्याणमल जी औदीच्य और माता मांगी बाई के घर एक ऐसे बालक का जन्म हुआ, जो आज पूरे राजसमंद जिले में अपने सेवा कार्य के लिए अपनी पहचान स्थापित कर चुका है और इस सेवा कार्य की लगन में अपनी माता और पिता का भरपूर योगदान रहा।

कहते हैं जहां चाह है, वहां राह है... यह कहावत इनकी जिंदगी में बहुत कुछ हद तक काम आई। पिताजी मथुराधीश मंदिर में मुखिया के पद पर कार्य करते थे। रहने के लिए किराए का मकान, ऐसे में जिंदगी जद्दोजहद में बसर हो रही थी। मंदिर से तनख्वाह चंद सिक्के मिलते थे, उससे चार बच्चों का पालन पोषण बहुत ही मुश्किल से चलता था। ऐसे में वहां से मिला हुआ प्रसाद बालक गोविंद और उनकी बहन बाजार में बेचकर आते थे और जो पैसे मिलते थे, उसी से गुजारा करते थे। ऐसे हालात में पढ़ाई लिखाई के बारे में सोचना एक ख्याल सा लगता था। मां ने अपने बच्चों की आंखों में देखा, तो उन्हें लगा कि गोविंद और पुत्री पढ़ना चाहती है, लेकिन तंगहाली में जो जीवन चल रहा था।

उसमें यह सफर काफी मुश्किल था, ऐसे में मां ने अपने बच्चों की पढ़ाई के लिए एक सिंधी परिवार में खाना बनाने की नौकरी कर ली, जिससे जो भी पैसा मिलता था। उससे भाई और बहन दोनों पड़ने लगे, यह सिलसिला कुछ सालों तक चलता रहा। अचानक जिंदगी ने फिर करवट ली और 1975 में पिताजी की मृत्यु हो गई और चलती हुई राह रुक गई। परिवार की सारी जिम्मेदारी गोविंद पर आ गई और पढ़ाई को बीच में ही छोड़ना पड़ा और दसवीं की पढ़ाई के बाद एक प्राइवेट स्कूल में नौकरी कर ली।

यह सिलसिला छह वर्ष तक चला, लेकिन गोविंद को आगे बढ़ना था, तो इन्होंने हिम्मत करके फिर शिक्षा की और अपने कदम बढ़ाए और अपनी पढ़ाई को पूरा किया और साथ ही अपनी बहन को भी पूरी शिक्षा करवाई। 1981 से 1984 तक पंचायत समिति राजसमंद में अध्यापक के रूप में इन्होंने अपनी सेवाएं दी। कुछ करने की चाहत के मद्देनजर एक निजी शिक्षण संस्था को भी संचालित किया। 1985 में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जनावद में एक शिक्षक के रूप में इनकी नियुक्ति हो गई।

इन्होंने राजसमंद जिले के कई गांवों में अपने अध्यापन से बच्चों की जिंदगी को संवारा है। इनका विवाह बहुत ही सादगी से मधु औदीच्य नाथद्वारा के साथ सामूहिक विवाह में संपन्न हुआ और उन्होंने दो पुत्रों को जन्म दिया। बहुत मेहनत से कुछ पैसे बचाए और एक हाथीनाड़ा कांकरोली में प्लॉट खरीदा, उस पर एक छोटा सा मकान बनाया, जहां आज भी वो रहते हैं। अपने बेटों को बहुत अच्छी शिक्षा दी। आज दोनों बेटे बहुत अच्छी नौकरी में स्थापित है। इन्होंने राजसमंद में स्काउट की जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेकर सच्ची सेवा से कई बच्चों की जिंदगी सवारने का कार्य किया, जो आज देश सेवा के लिए तत्पर अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। इसके लिए भी राज्य सरकार ने इनको पुरस्कृत किया।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय प्रथम में अपनी पूरी ड्यूटी निभाने के बाद कांकरोली के गर्ल्स सीनियर स्कूल में शिक्षक नहीं होने पर इन्होंने 4 वर्ष तक निशुल्क अंग्रेजी विषय में अपनी सेवाएं दी और परिणाम सत्य प्रतिशत दिलाया। इस सेवा कार्य की लगन में उस वक्त के जिला शिक्षा अधिकारी रमाकांत जी आमेटा और डॉ.

राकेश जी तैलंग का बहुत योगदान रहा। कांकरोली नगर अपनी संस्कृति और उत्सवों के लिए एक जाना पहचाना नाम है। यहां कई सवारी और उत्सव हर वर्ष होते रहते हैं। यहां की गणगौर की सवारी पूरे राजस्थान में प्रसिद्ध है। इसी सवारी में श्रीमान बजरंग जी व्यास अपने स्कूल के नई मुन्ने बच्चों के साथ नृत्य करते हुए उस सवारी में चार चांद लगाते थे।

यह देखकर गोविंदजी में भी एक ऊर्जा का संचार हुआ और उन्होंने सवारी में अपना योगदान देने का मन बना लिया। आज 20 वर्ष से गणगौर की सवारी में राजसमंद स्कूल के 40 स्कूलों की 300 से अधिक बच्चियों को माथे पर कलश लेकर नृत्य करते हुए जब हम देखते हैं, तो उसके पीछे गोविंद जी की कड़ी मेहनत और लगन को पाते हैं।

इन्होंने राजसमंद में होने वाले समस्त कार्यक्रम में अपना अपूर्ण योगदान हर समय, हर वक्त दिया है। नगरपरिषद राजसमंद द्वारा आयोजित होने वाले गणगौर महोत्सव, मेला एवं ठकुरानी तीज एवं अन्य कार्यक्रमों में अपनी सेवाएं देने पर नगर परिषद ने भी कई बार पुरस्कृत किया। स्वतंत्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपना योगदान देने के लिए इनको जिला कलक्टर ने भी कई बार पुरस्कृत किया। केंद्रीय लोक अधिकार मंच राजसमंद द्वारा 2002 मेला प्रेरक पद से सम्मान भी किया गया। द्वारकेश तैराकी संघ राजसमंद द्वारा छोटे बच्चों को निशुल्क तैराकी प्रशिक्षण देने के लिए भी इन को सम्मानित किया।

मानव संसाधन विभाग भारत सरकार एवं नगरपरिषद राजसमंद के तत्वावधान में सद्भावना दौड़ भारत स्वस्थ और बलवान के कार्यक्रम में अपनी सराहनीय प्रस्तुति से जिला कलक्टर द्वारा सम्मान मिला। 40वीं सीनियर जिम्नास्टिक चैंपियनशिप एवं अखिल भारतीय हॉकी प्रतियोगिता में उत्कृष्ट कार्य करने पर भी इनको सम्मानित किया गया। सन् 2014-15 जयपुर में तत्कालीन शिक्षा मंत्री वासुदेवजी देवनानी द्वारा पंडित श्रीराम आचार्य उत्कृष्ट सेवा शिक्षक सम्मान से भी इनको नवाजा गया। 2012 में सर्वसमाज सामूहिक विवाह में समर्पण लगन से सहयोग देने के लिए विधायक राजसमंद श्रीमती किरण माहेश्वरी द्वारा भी इनका सम्मान किया।

2015 में शिक्षक दिवस पर तत्कालीन जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी एवं श्रीमान कैलाशचंद्र जी वर्मा द्वारा राजसमंद में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्य करने हेतु भी इनको सम्मानित किया। अब तक स्थानीय बोर्ड 10वीं एवं 12वीं के शैक्षिक परिणाम उत्कृष्ट रहने पर दिन को सम्मान दिया। इनकी रूचि साहित्य, कला के क्षेत्र में शिक्षक और जाने माने लोक कवि एवं कलाकार श्रीमान मांगीलाल जी अफंगी से प्रभावित होकर हुई। आप श्री अफजल खान जी अफजल, श्री मनोहरगिरी जी गोस्वामी, श्री त्रिलोकी मोहन जी पुरोहित, श्री फतहलाल जी अनोखा, श्री भगवतजी शर्मा से भी प्रेरित रहे। आप 315/ 2019 को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पीपली आचार्यान व्याख्याता अंग्रेजी से सेवानिवृत्त हुए। आपने अपने नेक और अनेक कार्यो से समाज बहुत कुछ योगदान दिया।

सेवानिवृत्ति के बाद भी आपकी इच्छा है कि आखरी सांस तक राजसमंद जिले में होने वाले समस्त सरकारी एवं गैर सरकारी कार्यक्रमों में अपना योगदान देंगे। गोविंद जी कहते हैं कि मैं बालको की खुशियों में ही मैं ईश्वर का साक्षात्कार कर लेता हूं। बच्चों की सेवा में प्रभु के दर्शन हो जाते हैं। हर समय, हर पल उनकी सेवा में अपना योगदान लेकर अपने आपको गौरवान्वित महसूस करने की प्रतिज्ञा अपने दिल में रखते हैं। ऐसी राजसमंद की गुमनाम शख्सियत को हम दिल से सलाम करते हैं।

राहुल दीक्षित RD
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली
मो. 90010-11755

बाल उम्र का विवाह बना
जीवनभर का बोझ

सत्य घटना पर आधारित : सीमा की तरह कई बेटियां भुगत रही बाल विवाह का दंश

खेलने- कूदने, पढ़ने की उम्र में मासूम बेटियों के हाथ पीले करवा रहे हैं। मामूली खर्च बचाने के चक्कर में मां-बाप अपनी बड़ी बेटी के साथ छोटी को विदा करने पर तूले है। इसके लिए वे उनके बचपन तक की परवाह नहीं करते। नाजुक हाथों में खिलौने, पेन-पेंसिल की जगह चूल्हे चौके का जिम्मा मिल गया, जो अभी शादी का ठीक से मतलब ही नहीं समझती, उसे विवाह के बंधन में बांध दिया। मां-बाप की इस हठ के आगे शादी के लिए 18 की दुल्हन, 21 की उम्र के दूल्हे के कानून कायदे भी धरे रह गए।

कुछ इसी तरह बाल विवाह की शिकार बनी सोलह वर्षीय राजसमंद की सीमा। बड़ी बहन के साथ छोटी की भी शादी कर एक खर्च में दोहरा कार्य कर माता-पिता खूब खुश हुए। इस तरह न सीमा की उम्र का ख्याल रखा और न ही उसकी पढ़ाई पूरी होने दी। अपनी खुशियों का गला घोंटकर माता-पिता की इज्जत और उनकी खुशी के खातिर बाल उम्र में मजबूरी में शादी कर ली। मगर माता-पिता ने बेटी के लिए जीवनसाथी भी ऐसा तलाशा, जो उससे काफी कम पढ़ा लिखा था। इस तरह जरा भी ख्याल नहीं रखा कि उनकी बेटी ससुराल में खुश रह पाएगी या नहीं। बेटी की पसंद- नापसंद, पढ़ाई, कॅरियर को दांव पर लगा पूरा जीवन ही दु:खों के दलदल में धकेल दिया।

उसे जीवनसाथी चुनने तक का मौका नहीं मिला। फिर भी मां-बाप की खुशी के लिए ससुराल चली गई, जहां घर में कदम रखते ही अनजाना खौंफ सताने लगा। कम पढ़े-लिखे पति न खुद आगे पढ़ने को तैयार था और न ही उसे पढ़ाने के लिए राजी हुआ। ऐसे में सीमा की दिनचर्या एक घर की चारदीवारी में सीमित होकर रह गई। ससुराल पक्ष ने चेता दिया कि हमें नहीं पढ़ाना, हमें तो हमारे घर का काम करवाना है। इस एक वाक्य में सीमा के सारे सपने कांच की तरह चकनाचूर हो गए। जब पति व ससुराल पक्ष के इस तुगलकी फरमान के विरुद्ध उसने अपने सपने पूरे करने का सोचकर पीहर में बताया, तो मां-बाप ने भी स्पष्ट चेता दिया कि वह ससुराल में रहकर उसका घर संभाले, वहीं उसका सपना है और वहीं उसकी जिन्दगी है। मां-बाप को बेटी के सपनों और दु:ख दर्द से कोई वास्ता नहीं रह गया था और फिक्र थी, तो सिर्फ दोमुंही समाज के पंचों में इज्जत की, जो पहले से दकियानूसी सोच और अंधविश्वास पर टिका होकर बेइज्जत है। इस तरह सीमा की जिन्दगी ससुराल की चार दीवारी में कैद हो गई।

कुछ दिन तक पीहर-ससुराल की प्रताड़ना सहती रही, मगर लंबे समय तक बर्दाश्त नहीं कर सकी और सीमा ने फिर से पढ़ाई कर नए कॅरियर के साथ जीवन जीने की ठान ली। पति, सास-ससुर के साथ मां-बाप, भाई-बहन और सभी नाते-रिश्तेदार उसके इस निर्णय से खफा थे। मगर सीमा ने इसलिए उनकी इज्जत या बेइज्जत का ख्याल नहीं रखा, क्योंकि उन्होंने ही तो उसकी जिन्दगी की सारी खुशियां छीन ली थी। अब वह पीहर- ससुराल से दूर अकेले रहकर स्नातक की पढ़ाई करते हुए अपने कॅरियर को तराश रही है। जब भी उसे बाल विवाह और बीते कल की याद आती है, तो वह सिसक उठती है। अब बीती जिन्दगी को भूलकर नए जीवन की शुरुआत कर चुकी है। इस तरह उसने पीहर-ससुराल के चंगुल से मुक्त हो गई, मगर अब पढ़ाई शुरू करके कॅरियर और नए जीवन को लेकर संघर्षरत है।

जसवन्ता रावत,
देवगढ़ (राजसमंद)

नवला बा ने उदयपुर महाराणा से बक्शीश में मांगी उन्हीं की तस्वीर

कांकरोली से करीब 6-7 मील की दूरी पर एक गांव सुन्दरचा है, जहां पर श्री जीवरामजी पालीवाल के यहां सन् 1876 ई. में एक ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के धनी बालक ने जन्म लिया, जिसके लालन-पालन में माता दोषीबाई ने कोई कोर कसर बाकी नहीं छोड़ी। गांव में ही माता-पिता ने उनका नाम श्री नवलराम पालीवाल रखा। जब श्री नवलराम 5-6 साल के हुए, तभी उनके पिताजी श्री जीवरामजी सुन्दरचा गांव छोड़ अपने भाई सहित कांकरोली आ बसे और श्री नवलरामजी का बचपन से लेकर मृत्युपर्यन्त तक सारा जीवन कांकरोली में ही व्यतीत हुआ।

जब वे कुछ बड़े हुए तो श्री द्वारकाधीशजी के मन्दिर में दूधघरिया की नौकरी करने लगे और मन्दिर में ही पूरी निष्ठा से नौकरी करते हुए अपना गृहस्थ जीवन बिताने लगे। आपके पांच बेटे श्री हीरालाल, घोटूलाल, परसराम, हरिकिशन, नारायणलाल थे। इस भरे पूरे परिवार में आपका वरदहस्त सदैव सर्वोपरि रहा। जब वे मन्दिर की नौकरी से रिटायर हुए तो आपने सामाजिक कार्यों की ओर अपना ध्यान लगाना प्रारम्भ कर दिया। कांकरोली नया बाजार में एक बहुत बड़े भूखण्ड पर एक बहुत बड़ा मकान है, जिसे उस काल में नवला बा का नोहरा कहा जाता था। बहुत बड़ा दरवाजा था, जिसमें बैलगाड़ी जा सके, अन्दर बहुत बड़ा चौक था। फिर दो मंजिला कई कमरे उस समय एक बहुत ही सम्पन्न घराने का मकान लगता था।

कांकरोली के आस पास दूर दूर तक आप सांप के जहर को उतारने के लिए मशहूर थे। आसपास कहीं भी किसी को सांप ने डसा होता, तो नवला बा के नोहरे में वे ईलाज कराने जरूर आते थे। वे मंतर से तो ईलाज करते ही थे, साथ ही एक दवाई भी उस व्यक्ति को पिलाया करते थे, जिससे उसे उल्टियां होती थी और सारा जहर बाहर आ जाता था। ऐसा उनके सबसे छोटे बेटे नारायणजी ने बताया।

एक बार जब उदयपुर दरबार भोपालसिंहजी नौचोकी पाल पर पधारे, तो उनके ड्राईवर को वहां सांप ने डस लिया। तुरन्त उन्हें नवला बा के नोहरे में लाया गया, जहां उनका कुछ ही समय में सफल ईलाज कर दिया गया। जब ये बात दरबार के कानों तक पहुंची और वे जब रेबारी के बुलावे पर कांकरोली आए, तो नवला बा से मिले और कहा सचमुच तुम्हारे पास अद्भुत कला है। मंतर है, दवाई है, जो भी है अद्भुत है। कहो तुम्हें क्या चाहिए। नवलरामजी ने हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया और बोले हुजूर आपके दर्शन पाकर में धन्य हो गया। मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। बस आपका एक फोटो मुझे दे दो में रोज उसे देखता रहूंगा। दरबार हंसे ओर कहा पहुंच जाएगा। कुछ ही दिनों में एक बड़ा सा फोटो फ्रेम में जड़ा नवलरामजी के पास पहुंचा, जो आज भी उनके घर में शोभायमान है।

माईक सिस्टम का पहला प्रयोग भी आपने ही इस कांकरोली गांव में किया। कई प्रकार के वाद्य यंत्रों का प्रयोग भी आपने ही यहां प्रारंभ किया। साईकिल रिक्शा भी पहली बार गांव में आप ही लेकर आए। इंजन से चलने वाली आटा चक्की भी आपने ही लगाई। ईश्वर के प्रति आपकी अटूट आस्था थी। मंदिर में नौकरी के बाद भी आपने घर पर ही एक शिव मन्दिर का निर्माण कराया जो आज भी है। आपके नोहरे में आपने कृष्णावतार की सचित्र चित्रावली नई हवेली नाथद्वारा के चित्रकार श्री दामोदर नारायण से बनवाई। कृष्ण के जन्म से लेकर उनकी अनेक लीलाओं के चित्र व कंस के वध तक का सचित्र वर्णन दीवारों पर उकेरा था। इसी तरह रामावतार का भी सचित्र वर्णन आपने दीवारों पर करवाया। शिव मंदिर में शिव विवाह का सचित्र वर्णन आज भी उनके घर पर बने शिव मन्दिर में विद्यमान है। शतायु पार कर 1981 में स्वर्ग सिधार गए। ऐसे मेरे गांव के महापुरूष को कोटि-कोटि नमन् करते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि।

अफजल खां अफजल
जलचक्की, सलूस रोड
कांकरोली राजसमंद
मो. 98284-75288

राजसमंद में पर्यटन की संभावना

अरावली पर्वत शृंखलाओं से आच्छादित होकर अजमेर, पाली, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर की सरहद पर बसा राजसमंद जिले में कई पर्यटन स्थल है। प्राकृतिक, धार्मिक व ऐतिहासिक कई स्थल होने के बावजूद राजसमंद पर्यटन की दृष्टि से बहुत पिछड़ा हुआ है। अब जरूरत है, तो सिर्फ ठोस कार्य योजना बनाने की, ताकि पर्यटन भी बढ़े और नए रोजगार के अवसर भी सृजित हो सकें।

राजसमंद में श्री द्वारकाधीश मंदिर, नाथद्वारा में श्रीनाथजी, गढबोर में चारभुजानाथ के धार्मिक स्थलों के अलावा ऐतिहासिक स्थल कुंभलगढ़ दुर्ग, हल्दीघाटी, दिवेर स्थित विजय स्मारक, प्राकृतिक स्थलों में गोरम घाट, ठंडी वेरी सरीखे स्थलों पर भी पर्यटकों की पहुंच नहीं है। वर्तमान में कुंभलगढ़ दुर्ग और नाथद्वारा में श्रीनाथजी के दर्शन करने के लिए प्रतिवर्ष हजारों की तादाद में पर्यटक आते हैं, मगर वे पर्यटक राजसमंद जिले के अन्य पर्यटन स्थलों तक नहीं जा पा रहे हैं। इसके पीछे मुख्य वजह है, उन्हें उन पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी ही नहीं है।

पर्यटन विकास के लिए ये हो सकता है-

- उदयपुर, भीलवाड़ा व चित्तौड़गढ़ से आने वाले पर्यटकों के लिए पर्यटन सक्रिय बनाया जा सकता है। अगर कांकरोली से मारवाड़ जाने वाली ट्रेन को पूर्व की तरफ जोधपुर तक चलाया जाए, कई लोग इन पर्यटन स्थलों तक आ सकते हैं।
- जिला स्तर पर धार्मिक, प्राकृतिक व ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की पूरी जानकारी मिले, ऐसी जगह विकसित करना आवश्यक है, ताकि लोगों को राजसमंद जिले के पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी मिले और वे अन्य पर्यटन स्थलों पर जाने का मानस बना सकें।
- युवाओं को रोजगार देने की दृष्टि से औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, आजीविका मिशन संस्थानों में गाइड का अल्पकालीन प्रशिक्षण शुरू करने पर विचार किया जा सकता है। इससे युवाओं द्वारा प्रशिक्षण उपरांत आने वाले पर्यटकों को विभिन्न दर्शनीय स्थलों का अवलोकन व जानकारी दी जा सकती है। गाइड प्रशिक्षण में चयन के लिए विभिन्न संबंधित एजेन्सियां लिखित परीक्षा/ साक्षात्कार के माध्यम से पर्यटन स्थलों, पूरा सम्पदा व सांस्कृतिक जानकारियां रखने वाले युवाओं का चयन कर प्रशिक्षण आयोजित किए जा सकते हैं।
- प्रशिक्षित गाइडो की सूची जिला पर्यटन केंद्र व वन विभाग के पास उपलब्ध होनी चाहिए, ताकि पर्यटन स्थलों स्थलों पर उन्हें लगा सकें और आमजन को भी संबंधित पर्यटन स्थल की पूर्ण जानकारी मिल सकें।
- कुंभलगढ़ किला और कुंभलगढ़ अभ्यारण्य, रावली टॉडगढ़ अभ्यारण्य को वन एवं पर्यटन विभाग द्वारा संयुक्त भ्रमण कार्यक्रम तय करना चाहिए, ताकि पर्यटकों को एक साभ अभ्यारण्य और अन्य ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का भ्रमण हो सकें।
- मेवाड़ कॉम्पलेक्स योजना को राजसमंद जिले में लागू करने की महती आवश्यकता है। जिलाव उपखंड स्तर पर पर्यटन समितियों को सक्रिय करते हुए पर्यटन विकास की दिशा में ठोस कार्ययोजना बनाने की जरूरत है।

हर्षवर्द्धनसिंह भाटी
महावीरनगर, सौ फीट रोड
कांकरोली 94141-72468

ऋषि या कृषि पंचमी ?

भादो की पंचमी को ऋषि पंचमी के रूप में मनाया जाता है। मैं अक्सर देखता हूं कि इस दिन व्रतार्थी महिलाएं अपने घर के आसपास खड़ी वनस्पति को खोजने जाती हैं। सांवा, मलीचि, अपामार्ग, दूर्वा आदि को खोजती है और उखाड़कर ले आती है। घर पर उनको पीले परिधान या धागों में लपेटती हैं और ऋषि बनाकर पूजा करती हैं। व्रतवार्ता तो महाभारत के प्रसंग की करती हैं ही, मगर मैं यह परंपरा देखकर हर बार सोचता हूं कि कहीं यह कृषि पर्व तो नहीं है ? ऋषियों ने इस विद्या के विषय में कहा है।

सस्यविद्या च वितता एता विद्या महाफला।
धर्माधर्मप्रणयिनी धर्माधर्म प्रसाधिका।।

(सस्यवेद : श्री कृष्ण जुगनू, चौखम्बा)

क्योंकि, कृषि की खोज का श्रेय नारियों को जाता है। विल डूईरां ने 'द लाईफ ऑफ ग्रीस' में मिथकों पर विचार करते हुए माना है कि औरतें हल के प्रयोग में आने से पहले फावड़े से कृषि कार्य करती थीं। जब हल खेती के लिए आया, तो यह कार्य पुरुषों के हाथ चढ़ गया तथापि महिलाएं इससे जुदा नहीं हुई।

आदिम दौर में पुरुष शिकार के लिए भटकते रहते थे और औरतें जानवरों की हड्डियों और लकड़ी की गोदनियों से भूमि खोदकर विभिन्न कन्दमूल आदि जमा करती थीं। इससे स्वाभाविक रूप से औरतों को यह जानकारी मिली कि कौनसे पौधे कहां, किस रूप में और किस मौसम में मिल सकते हैं और उनकी क्या किस्में, प्रजातियां होती हैं ?

मैंने भी अपनी 'काश्यपीय कृषि पद्धति' की भूमिका में इस बात को उठाया है। वैसे हमारे यहां देवियों का नामकरण भी इसी कृषि वनस्पति के कारण हुआ है। जैसा कि मार्कण्डेय पुराण में कुष्मांडा व शाकम्भरी के लिए कहा गया है और यही मत बाद में शिवपुराण में भी लिया गया है कि शाक सब्जियां उगाने के कारण देवी का नाम शाकम्भरी हुआ।

आत्मदेह समुद्भूतैः शाकैर्लोका भृता यतः।
शाकम्भरीति विख्यातं तत्ते नाम भविष्यति।।

(शिवपुराण उमासंहिता 50, 35)

क्यों अधिकांश औषधियों, सब्जियों आदि का नामकरण स्त्रीलिंगवाची हैं। क्यों हल की रेखा के नाम 'सीता' से औरतों का भी नामकरण किया जाने लगा ? हां, सांवा धान्य प्रारंभिक खाद्य औषधि के रूप में माना गया। जैसा कि 'समरांगण सूत्रधार' आदि में

आया है, जो बिना खेत को हांके ही उत्पन्न हो जाता है और फिर ऋषि पंचमी के दिन इसी का आहार यह मानकर किया जाता है कि इस दिन औरतें हल हांककर उपजाया धान्य नहीं खातीं। जरूर ऋषि पंचमी के साथ कहीं न कही कृषि की परंपरा का तथ्य निहित लगता है। मित्रगण इस संबंध में अधिक विचार करेंगे। हां, इसी दिन रक्षाबंधन की परिपाटी उस युग की याद दिलाती है, जबकि भारतीय मूल के कपास के पौधे रुई वाले हो जाते थे और वह ऋषि ज्ञानोपज रक्षात्मक होकर पारस्परिकता का भाव पोषित करती लगती थी।

यों इस दिन कश्यप, अत्रि, भारद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और वशिष्ठ सप्त ऋषि का पूजन, स्मरण होता है और इनमें से अधिकांश का संबंध कृषि से रहा है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए–

कश्यपोत्रिर्भरद्वाजो विश्वामित्रोय गौतमः।
जमदग्निर्वसिष्ठश्च सप्तैते ऋषयः स्मृतारू।
गृह्णन्त्वर्घ्यं मया दत्तं तुष्टा भवत में सदा।।

श्रीकृष्ण 'जुगनू'
वरिष्ठ साहित्यकार, उदयपुर

कीमत मातृत्व की

कीमत क्या अदा करु
इस मातृत्व की
अल्प है समस्त सम्पत्ति
सृष्टि की।
देह त्याग दूं
फिर भी कीमत अदा नहीं
इस मातृत्व की।
और क्या कीमत अदा करु
नौ माह उदर में पालने की
भला नहीं मांगती मां
कीमत इस मातृत्व की।
पर ये सोचकर में हेरान
कि आखिर क्या होगी कीमत
इस मातृत्व की।
झलक दिख गई सौभाग्य से
इस सृष्टि में ईश्वर की,
समर्पित क्या करु
अल्प लगती समस्त सम्पत्ति
सृष्टि की।

योगेन्द्र जीनगर,
राजसमंद

गजल

सफर ज़िंदगी का है तन्हा तन्हा,
जिन्दगी का आगाज और
अब अंजाम भी है तन्हा तन्हा।
कौन कहता है कि
साथ देता है परवाना,
हमने देखा है
शमा जली है तन्हा-तन्हा।
अश्क गिरते रहे
रुख़सारो पर,
शब ए नम ढलती रही
तन्हा-तन्हा।
रात भर उनकी याद के सहारे
हम करवटें बदलते रहे
तन्हा-तन्हा।
तुम आने का वादा तो कर जाते
हम उम्र गुज़ार लेते
तन्हा-तन्हा।
ना रो उस बेवफ़ा को
ए दिल-ए-नादां
सफर में जो छोड़ गया तन्हा-तन्हा।

राधिका मिश्रा
लखनऊ

प्यारी मां

जब भी याद आता है बचपन
कोई ऐसा दृश्य नहीं देख पाता
जिसमें तू न हो।
मेरी छोटी-छोटी परेशानियों से
आक्रांत तेरा चेहरा
छोटी-छोटी सफलताओं से
आल्हादित तेरा चेहरा।
मुझे मारकर ग्लानि से तेरा रोना
तेरे सीने से लग बाहों में तेरी सोना
वो छोटा सा कमरा जहां बैठकर
तू हमें गीता सुनाया करती थी
मेरी हर गलती को छिपाने के लिए
तू मेरी ढाल बन जाया करती थी
मेरे तन के साथ मन को भी संवारा तूने,
रातें जागकर हमारी जिम्मेदारी को
सम्भाला तूने, सिर्फ इसलिए कि
हमारा भविष्य सुखद हो,
तू अपना हर सुख- दुख भूल गई थी मां।
मेरे मान के लिए कितने अपमान सहे तूने,
मेरी हंसी के लिए कितने आंसू पीये तूने।
तेरा कर्ज चुकाने की बात सोचना पाप है मां
इस कर्ज के साथ जीने में ही सुख है।
मैंने तेरे लिए कुछ नहीं किया,
इसका जरूर दुख है।
फिर मां तू मां है
तेरा ही दूसरा नाम क्षमा है।
मेरे सिर पर प्यार से अपना हाथ रखना मां,
प्यारी मां,
सदा मुझे याद रखना।

प्रवीण मंगल
फोटो जर्नलिस्ट
गीता कुंज, गोपालजी
मोहल्ला ब्यावर 99837-24100

मुक्तक

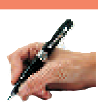

सुलगती आग को भड़काने वाले बहुत मिलेंगे,
तड़फती जिन्दगी को तड़फाने वाले बहुत मिलें,
मगर कमी है इस जहां में जख्म भरने वालों की,
बहते आंसुओं पर मुस्कुराने वाले बहुत मिलेंगे।

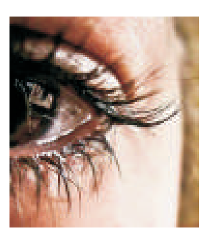

व्यक्ति समाज में बड़ा होता है, समाज में खाता-पीता है,
अपने जीवन व्यवहार का वस्त्र, सहकार सूत्र से सीता है,
भले कोई अपने आपको कितना ही विशिष्ट क्यों न माने,
पर हकीकत में वह समाज का अंग है, समाज में ज

भगवानसिंह सोलंकी,
झीलवाड़ा, राजसमंद

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
करें कॉल : 94142-39648

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम- श्री/श्रीमती...

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
3 वर्ष	36	720	220	200 रुपए

जयवर्द्धन 3 वर्ष की बुकिंग से 220 रुपए की महाबचत

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,

जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुन: निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

राजसमंद झील परिक्रमा

ब्रह्मा की इस सृष्टि में नारी वर्ग का बड़ा महत्त्व है। इसके बिना शायद ये जीवन धारा प्रवाहित न रहती और ना ही इस धरा धाम पर प्राणी वर्ग में आकर्षण विकर्षण रह पाता। यह कुदरत की योग माया है। नारी सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति है। देवी स्वरुपा है, इसमें धरती माता की तरह सब कुछ सहन करने की क्षमता है। पुरुष की सहधर्मिणी है नारी।

अत: हमें कन्याओं का पालन पोषण भी पुत्रों की तरह ही करना चाहिए। पुत्र-पुत्री, माता-पिता की दो आंखे है। शिक्षा संस्कारों में प्रवीण कर किसी सुयोग्य वर के साथ संबंध जोड़ धरती माता के इस ऋण से उरिण हो जाना चाहिए तथा इस पुण्य गंगा में अपने को भागीदार बनाकर जग में यश प्राप्त करना चाहिए।

आदि देव गौरीशंकर की कृपा से मेरे घर दो पुत्र रत्न है- भरत कुमार औरउदीप कुमार। इन्हें प्राप्त कर हम दोनों पति-पत्नी प्रसन्न चित्त थे, लेकिन मेरी श्रीमती धनवंती देवी ने भाईयों की इस जोड़ी से अपने मन में पूर्ण संतुष्टि प्राप्त नहीं की। इसके अन्तर मन में कन्या प्राप्त करने की चाहना बनी रही। श्रीमतीजी की चाहत का मैंने भी हृदय से समर्थन किया और ये धारणा बना ली कि कन्या नहीं तो कुछ भी नहीं, कन्या पुण्य की गंगा और धर्म की बेल है, जो कि प्रत्येक गृहस्थी की बगिया में होनी ही चाहिए।

फिर मेरी शिक्षा सेवा का दौरान उदयपुर जिले के गोगुन्दा तहसील के एक घनी गहरी अरावलियों की घाटी में बसे गांव मोरवल में जहां पर उस आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में शंकर बाबा के नाम से जाने वाले शिव धाम पर मार्च 1988 में कवि अनोखा और नन्दलाल जी पूर्बिया, आनंदीलाल 'आनंद' के सानिध्य में पुत्री की चाहत मन में लिए भगवान शंकर की पूजा अर्चना की गई। प्रभु ने हम पति- पत्नी की सुनी की सुनी और काल क्रम के फेर में श्रीमती की गोद भरी और 22 अगस्त 1989 के शुभ दिन लक्ष्मी नाम से कन्या का जन्म हुआ, जिसे आज हम प्रेम से स्वाती के नाम से पुकारते हैं, जो अभी जीव विज्ञान के विषय की द्वितीय वर्ष की छात्रा है। मुझे लगा उस अन्तरयामी ने जो मांगा वो दिया, हमारी सभी इच्छा पूर्ण कर दी।

मैं स्वाती को भारतीय संस्कारों में ढालना चाहता हूं। इसकी शिक्षा- दीक्षा पूर्ण होने पर किसी सुयोग्य वर से पाणिग्रहण संस्कार करा इस धरती माता के ऋण से उरिण हो जाऊ, ऐसी मेरी इच्छा है। आगे प्रभु की जैसी लीला और भगवान शंकर क जैसी अनुकम्पा। एक दिन स्वाती ने मेरे से पूछा- पापा कार्तिक स्नान का क्या महत्त्व है ? मैंने कहा बेटा- भारतीय सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में इसका बड़ा महत्त्व है।

हमारे रामायण, महाभारत, वेद पुराणों में ऋषियों ने धार्मिक क्रिया कलापों से जोड़ इसे विज्ञान सहमत भी बना दिया है। शास्त्रों में पर्वो, उत्सवों धार्मिक कृत्यों की अनेक गाथाएं है। कार्तिक स्नान और शिव परिवार के पूजने से सुहागिनों और कुंवारी कन्याओं को मनवांछित फल प्राप्त होता है। ऐसा हमारे पुरोधा मनिषी भी कहते आए हैं। कार्तिक स्नान से शरीर स्वस्थ्य रहता है, चेहरे पर कांति बनी रहती है, मन प्रसन्न रहता है।

फिर क्या था स्वाती ने भी इसका मम्मी को राजी कर कार्तिक स्नान करने की मन में ठान ली। मैं भी इन दोनों के पुण्य कृत्य में अपने पूर्ण मनोयोग से जुड़ गया। हमारे इस क्षेत्र में कार्तिक स्नान करने वाली महिलाएं, रायसागर के चारों ओर परिक्रमा कर अपने व्रत को सफल मानती है। मेरे घर से भी स्वाती को व्रत के दौरान राजसमंद झील की परिक्रमा करनी थी। अत: हम भी कार्तिक शुक्ला त्रयोदसी को अपने मधु सदन से सुबह 10 बजे प्रस्थान कर गए। मैंने मन में सोचा कि ये दोनों अकेले इस लम्बी यात्रा में जाएगी। ये ठीक नहीं, मुझे भी इस पुण्य सलिला में हाथ धो लेने चाहिए। जल जीवन है, नारायण स्वरुप है। हमने अपने घर से पाल पर होकर मंदिर दर्शन कर नौचोकी की तरफ से जाने का सोच लिया। लाल बंगला पाल पर होते हुए श्री द्वारकाधीश मंदिर पहुंचे। दर्शनों का लाभ लिया, दर्शनों का आनंद भी अनुम्प रहा। कारण कि गुजरात, सुरत से पधारे स्वरुप श्री मदन मोहनजी और लाडलेश जी तथा कांकरोली के मथुराधीश और श्री द्वारकाधीश के एक साथ दर्शन कर हम धन्य हुए। मंदिर की परिक्रमा में होते हुए पीपली घाट से बाड़ी के अखाड़े पर होते हुए बगरु सलूस से लक्ष्मण घाट पार करते हुए सागर किनारे किनारे धीरे धीरे आगे बढ़े साधना शिखर और शाह दयाल के पहाड़ की ओट होते हुए झाड़ झंकार, कंकरीले टेढ़े- मेढ़े, ऊंचे-नीचे रास्ते को पार करते हुए हम एक ऐसी चट्टान के पास पहुंच गए, जहां से नौचोकी का भरपूर नजारा, भली प्रकार से देखा जा सके। सुदूर पूर्व दिशा की ओर घनी वृक्षावली, एरिगेशन गार्डन, अदब की छतरी, कमलबुर्ज दिखाई दे रहे थे। पास में ही सागर का लहराता पानी, मन को अजीब शकुन दे रहा था। जल में लहराती किलोल करती धाराएं किनारों से थपेड़े खा रही थी। एक धीमी, किन्तु विचित्र प्रतिध्वनि का अहसास हो रहा था। मानो ये लहरें मुझे किसी ऐतिहासिक गाथा की याद दिला रही हो।

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

आपके शहर व गांव से जुड़ी मूलभुत समस्या, नवाचार, आयोजन, मुद्दे, लेख, चुटकले, कहानी, कविता हमें भेजे
E-Mail : jaivardhanpatrika@gmail.com

हम घेवर माताजी के ऊपर वाले पहाड़ी रास्ते पगडंडी के सहारे नौचोकी झौंक की तरफ से होते हुए घेवर माता और अम्बा माताजी के दर्शन करने नीचे पाल पर उतर रहे थे। मैंने स्वाती और श्रीमती को सामने पहाड़ पर इशारा करके बताया कि वो देखो पुराने महल है ? ये महल राजसमंद के निर्माता महाराणा राजसिंह के भवन है। राणा राजसिंह के पास ही मामु भाणेज की मजार है। जो कभी मराठा आतंकियो, जोगियो से लड़ते हुए राणा की सेवा में शहीद हो गए थे। इन भवनों में ही महाराणा की आराध्य देवी अन्नपूर्णा देवी बिराज रही है। मुझे स्वाती ने सामने पहाड़ पर इशारा करके बताया कि पापा मजार के नीचे ढलान में सफेद संगमरमर का खंडहर भवन क्या है। मैंने बताया कि देखो इस खंडहर भवन से महाराणा रायसिंह और रूपनगढ़ की राजकुमारी चारुमती की प्रणय गाथा जुड़ी हुई है। औरंगजेब के आतंक से बचाकर राणा राजसिंह मारवाड़ से राजकुमारी चारूमती को अपने साथ यहां लाकर शादी रचाई थी। चारूमती पूर्णिमा की चन्द्रिका में इस झरोखे में बैठकर राणा से प्रश्न कर रही थी, सामने रायसागर के पानी में चन्द्र किरणें अपने बिम्ब-प्रतिबिम्ब से, अनगिनत रूप छटा पानी में बिखेर रही थी- ऐसे सुन्दर सहावने क्षणों में- चारूमती ने राणा से पूछा- बूंदीगढ़ की हाड़ी राणी ने अपने पति सलूम्बर के चुंडावत सरदार को अपना सिर काटकर दे दिया। उसके बाद क्या हुआ, जरा बताओ तो ?

राणा ने कहा देवी ? उनके त्याग और बलिदान से ही तो तुम मेरे पास बैठी हो ? राजकुमारी के मुख से धन्य धन्य शब्द उच्चारित हुआ। ये वर्णन मैंने रानी लक्ष्मी कुमारी चुंडावत (लेखक) की पहली प्रकाशित पुस्तक मांझल रात में पढ़ा था। मैंने श्रीमती और स्वाती को बताया- उनकी उत्सुकता और बढ़ी। मैंने पूरी कहानी फिर कभी सुनाने का वचन दिया।

"SHREE"
Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101
धमाका ऑफर
लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....
ब्राण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में
ब्राण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

माताजी के दर्शन कर हमने नौचोकी पाल पर मूर्तिकला का अवलोकन किया। छतरी तोरण द्वार देखकर मूर्तिकारों की कला की प्रशंसा की। उन्होंने राणा की कलात्मक, धार्मिक भावनाओं को उकेर कर राणाजी का नाम सदा सदा के लिए इतिहास में अमर कर दिया है। इसी पाल पर पं. रणछोड़ राय भट्ट ने चौबीस सर्गों में संस्कृत और पाली भाषा में एशिया का सबसे बड़ा शिलालेख लिखा था। इसमें राणा और राजसमंद के बनाने का हेतु तथा द्वारकाधीश के पाल पर बिराजने की भी जानकारी है।

इसके पश्चात हम नौचोकी मुख्य द्वार से सार्वजनिक निर्माण विभाग ऑफिस के पास होते हुए हाथी भाटा घाट से पहाड़ के नीचे कच्ची सड़क को पार करते हुए सेवाली गांव पहुंच गए। वहां से राष्ट्रीय राजमार्ग 8 से भगवान्दा खुर्द गांव पहुंच गए। भगवान्दा खुर्द गांव में होकर मोरचणा हनुमानजी मंदिर के पास होकर किनारे किनारे वृक्षों की झुरमुटों में होते हुए रायसागर की पूरक नहर जो बनास और खारी फीडर से आती है, उसे पार किया। इस नहर निर्माण में पूर्व मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया व जननायक आचार्य निरंजननाथ जी का सपना था कि रायसागर भरा रहे, मगर अब यह पूरक नहर राजनीति पड़पंच में पड़ गई है और सतत प्रवाहित होने की इन्तजार में है।

चलते चलते हम छापरखेड़ी गांव के पास पहुंच गए, जहां से रूपनारायणजी के पहाड़ों से निकली गोमती नदी राजसमंद में गिरती है। हमने गोमती नदी की झीनी रेत में विश्राम किया। इसी जगह पर स्वाती ने और श्रीमतीजी ने बालू का मंदिर और शिवलिंग बनाकर पूजा अर्चना की और रेत से ही बेरी खोद कर गंगाजल निकाला। हमने आचमन किया, नदी माता को प्रणाम किया।

धूप सिर पर आ गई थी। अब हम वृक्षों की छाया वाले रास्ते से सागर किनारे होते हुए भाणा, लवाणा गांव के समीप पहुंच गए थे। एक किसान भाई के कुएं पर कुछ फलाहार किया और शीतल जल से अपनी प्यास बुझाई। तत्पश्चात हम लवाणा गांव में प्रवेश हुए, वहां पर मेरे परिचित किसान भाई, हमको देख बड़े प्रसन्न हुए और बोले मधुजी मास्टर साहब आप भाणो छोड्या केड़े हेड मास्टर साहब घणा दना में दर्शन दीदा। आप कांई म्हाने भुल गिया हो। मैंने कहा नी सा आपने भूल्यो कोनी हूं, आज तो मिलवारो जोग संजोग हो– ई म्हारी कन्या स्वाती रे कारण सूं आपरो म्हारो मिलणो ठाकुरजी कर्‌यो है। उन्होंने हमें चाय पानी कराया, उसके बाद प्रेम से हमें वहां से उठने दिया। मैंने पत्नी से कहा कि देखो गांवों में आज भी प्रेम व्यवहार जीवित है, चाहे दुनियां कितने ही रंग बदल दें। यहीं तो हमारे भारतीय गांवों की विशेषता है।

अब हम थकान से हैरान हो गए थे। धीरे– धीरे कमलबुर्ज की छतरी तक पहुंचे, कुछ देर विश्राम करने के बाद पाल पाल हरियाली तीरो का दृश्य देखते हुए अदब की छतरी पार की और एरिगेशन गार्डन और राडाजी की छतरी से होते हुए सिंचाई विभाग कार्यालय पास कर हम गो घाटष्ट पर आ गए। संध्या ढल रही थी। भगवान सूर्यनारायण अस्ताचल की ओट हो रहे थे। इस प्रकार हम सुबह 10 बजे से निकले इस पुण्य यात्रा को सायं 6 बजे तक पूरी कर पाए और अपने सदन आकर विश्राम किया।

यह यात्रा हमारे जीवन में चिरस्मरणीय रहेगी। भारतीय दर्शन में धार्मिक त्यौहारों, पर्वों का बड़ा महत्त्व है। इस कन्या के निमित्त मैंने भी सपत्नीक इस पुण्य धारा में हाथ धो लिए। यदि ये कन्या न होती तो शायद भूतो न भविष्यति मैं मेरे रायसागर की परिक्रमा कभी नहीं कर सकता था। यह मेरे लिए शुभ वेला थी। अत: कन्याएं और भी न जाने जीवन में किन किन पुण्यों के द्वार खोलती है, कोई नहीं जानता। हमारे घर में कन्या होना सौभाग्य की बात है। पता नहीं जमाने की इस हवा में कन्या भ्रूण हत्या जैसा महापाप कर नर नारी क्यों अपने सिर पर पाप की गठरी बांधते हैं। इस महापाप तक से प्रत्येक स्त्री पुरुषों को बचना चाहिए। जो जीवन हम दे नहीं सकते, उसे मिटाने का भी हमारा अधिकार नहीं है।

कन्या भ्रूण हत्या से क्यों नहीं डरते लोग।
ये तो धर्म की गंगा है, कुदरत जोग संजोग ।।

दुर्गाशंकर यादव 'मधु'
कांकरोली- राजसमंद

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

तीखी मिर्ची

जयवर्द्धन के इस कॉलम के लिए आप भी सुझा सकते हैं, आमजन से जुड़ा कोई मुद्दा, लिख भेजिए-
E-mail : jaivardhanpatrika@gmail.com
वाट्सएप करें - 94142-39648

भयभीत हवलदार

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com

थाने के रिसेप्शन हॉल में हाथ में तंबाकू रगड़ते हुए सोफे पर पालगती मारकर बैठा हवलदार टीवी देख रहा था। सड़क यातायात नियमों के बदलाव की खबर देखकर हाथ की तम्बाकू शीघ्र मुंह में ठूसकर परेशान सा हवलदार दौड़ते हुए थानेदारजी के पास पहुंचा और बोला, गजब हो गई हाकम! यह मोदीजी तो सबकी कमाई पर ताला लगाने वाला है। नए नियम में यातायात जुर्माना राशि दस गुनी हो गई हैं। अगर सभी लोग नियमों से चलने लग गए, तो फिर हमारे घर की सब्जी का जुगाड़ कहां से होगा? हमने कौनसा गुनाह किया था। अब यह नियमों में बदलाव करके आखिर क्या करना चाह रहे है? बिचारा एक आदमी पत्नी की टेंशन से मुक्त होकर ऑफिस की टेंशन में प्रवेश करता है। इस संधिकाल में जब घर से निकलता है, तो खुशी मिश्रित गम में अक्सर अपना हेलमेट तो भूल ही जाता है और अक्सर जब हमारी किस्मत से चौराहे पर निकलता है, तो हम कौनसी उसकी जेब काट लेते थे, पचास सौ रुपए तो वो खुशी से नजराना देकर जा रहा था। अब अगर एक हजार से पच्चीस हजार तक के जुर्माने लगने लगे, तो आम आदमी मोटरसाइकिल की चाबी लेने से पहले हेलमेट उठाएगा फिर ही चाबी को हाथ लगाएगा और इस तरह यदि सारे लोग नियमों के अनुसार चलने लग जाएंगे, तो फिर हमारे बच्चे कहां जाएंगे? फिर हमें तो गाड़ी चेक करने की मुफ्त मजदूरी करनी पड़ जाएगी। इस हवलदार की बातें सुनकर दूसरे सिपाही भी चिन्तामग्न हो गए।

उन्हें अपनी मकान की किश्त, बच्चों की महंगी फीस सहित बड़े- बड़े खर्चे का डर दिखाई देने लगा था। तभी एक सिपाही बोला- अब तक तो हम सात दिन का वसूली सप्ताह, मेरा मतलब यातायात सजगता सप्ताह आयोजित कर अपनी भरपाई कर लेते थे। फिर तीन महीने तक राहत की फसल उगाते थे, जिससे यातायात नियमों से बेखबर लोग पुन: हमारी वसूली के लिए तैयार हो जाते थे और हम अपनी फसल काट देते थे। मगर इस तरह के जुर्माने से तो अब बड़ी मुश्किल हो जाएगी।

अब तक मौन रहकर सारी बातें सुन रहे थानेदारजी से अपने हवलदार व सिपाही की चिन्ता जब देखी नहीं गई, तो बोले- किसी को कोई चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। उल्टा खुश होने की बात है, तुम फालतू परेशान हो रहे हो, मैंने अपने बाल धूप में सफेद नहीं किए हैं। यह भारत है भारत, यह विदेश नहीं है, जहां नियम बनते ही लोग सजगता से पालन करने लग जाएंगे। इस भारत में किसी को अपनी सुरक्षा की परवाह नहीं है। अभी जमीन से नहीं निकले छोटे छोटे बच्चों को भी मां बाप रेसिंग गाड़ियां दिलाते हैं। सामने वाले की छोड़ो मगर खुद के बच्चों की सुरक्षा की चिन्ता भी नहीं करते हैं। अब यह बढ़े हुए जुर्माने तो लोगों को भयभीत करने में बड़े सहायक सिद्ध होंगे, जहां लोग पचास सौ रुपए हमें देने में नाटक करते थे। अब आसानी से हजार रुपए निकालेंगे। देखना हमारी तो लॉटरी लग जाएगी लॉटरी।

यह सुनकर हवलदार व सिपाही की आंखों में खुशी के आंसू छलक गए।

"SHREE"

Tension®

SHOWROOM

Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt

धमाका ऑफर

लोग सस्ता कहते है, हम सस्ता देते हैं....

ब्राण्डेड शर्ट
1 पीस
₹ 299 में

ब्राण्डेड जीन्स
1 पीस
₹ 499 में

शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)

Mob. 8769955630, 7230059101

अंधियारों में भी चांदनी रात देखता हूं

अंधियारों में भी चांदनी रात देखता हूं,
मैं हर काली रात में प्रभात देखता हूं।
होने को तो मैं कुछ भी नहीं पर,
बहुत कुछ होने के ख्यालात देखता हूं।
तन्हाई से घिरी जिंदगी तो क्या,
मैं जुदाई में भी मुलाकात देखता हूं।
इंसानों के बीच यह कैसी खाई,
इक मजहब, इक ही जात देखता हूं।
सूखे हो टुकड़े, भोजन के दरमियां
हर निवाले में छतीस भात देखता हूं।
जुलूस तो जुलूस ही होता 'मनोज'
जनाजे के वक्त भी बारात देखता हूं।

मनोजसिंह राजवा
मगरांचल चेतना संघ
मो. 9571561404
व्हाट्सएप 9660412404

शक्ति स्पोर्ट्स

एक ही जगह पर
सभी तरह की खेलकूद सामग्री
मिलने का एकमात्र स्थान
जेके मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली
जिला राजसमंद, 9414473275, 94142-39648

An ISO -9001:2015
M. 9829445469, 9929495228
शाईन कम्प्यूटर्स
RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)
C.F.A (Tally)
पूर्ण व्यवसायिक कोर्स
GST/Tally ERP
SHiNE
RS-CIT
Tally पूर्ण व्यवसायिक कोर्स
DCA
PGDCA
PDCA
Spoken English
राजसमन्द का नं. 1 कम्प्यूटर संस्थान
शास्त्री मार्केट, कांकरोली फोन नं. 02952-220469
शीतला माता मंदिर के पास, राजसमंद फोन नं. 02952-220228

गारा रौ ठामड़ो

व्हो लुगाई री पगस (पक्ष) करे तो मां वैराजी वेवे अर मां री वात राखे तो घरवाळी अणबोली वेई जावे। बापड़ो गोपो तो दो मारी छुरी व्हेई ग्यो। वणी री लुगाई रो सुभाव खोटो हो। सांसू ने तो व्हा फूटी आंख देखणी नी चावे। घर में राड़ कींकर मटे ? गोपो जाणे क गंगली म्हे लखण व्हेता तो बुढ़ापा में म्हारी मां ने फोड़ा नी पड़वा देती। बुढ़ापो तो एक दन सगळा रो आवे है। मोट्यार पणा म्हे मनख आ वात भुली जावे के कीधा करमां रा फळ तो भोगणाइज पड़ेला, पण खोडिली ने कींकर समझावे ?

गोपा रे मोटका छोरा रो व्याव वियो ने लसमी घर म्हे आई। वीन्दणी देख्यो क म्हारा सासूजी मोटका (दादी) सासूजी रो कई कांण कायदो कोनी राखे। नी तो खाणो गत रो देवे, नी ओढ़वा- विछ्ञवा पूरो है। डोकरी एक फाटी टूटी गोदड़ी में गोटो वेई ने पड़ी पड़ी धूज्यां करे। लसमी होच्यो म्हारी दादी री तो घर में सगळा मनख घणी सेवा चाकरी करता ने राजी राखता हा। अठे ओ कांई तोल है ? लसमी री मायड़ आये दन कियां करती भूख तरस्या अर भूडा- ठाढा मनखां री सेवा चाकरी करवा सूं जीव राजी रेवे अर आगले भौव पाछौ मनख जमारो मले, नीतर गडूरो वणे।

लसमी सूं डोकरी री दसा देखी नी गी। व्हा वणी रे खावा- पीवा अर ओढवा- विछावा रो चोखो जुगाड़ करवा लागी, तो गंगली रीस करे नै बोली- आ पंचात थने कुण भळाई ? अठे घणी हुंश्यारी नी वतावणी, थारे बाप रे घर री रीत वठेई रेवा दे। थूं तो अणी घर म्हे काले आई है। केवा वतरोइज करणो। लसमी जाणेगी क आ लुगाई अणी रा धणी नेई माछर जाणे, तो म्हूं कश्या खेत री चीलड़ी हूं ? आ तो नी तो करे अर नी दूजा ने करवा देवे। अबे अश्या मनख ने कींकर डाड (रोवां) देवा ? लसमी ने सबसूं वती खोटी वात तो आ लागी के डोकरी ने खाणो थाळी- गोळ्या री जग्या एक गारा रा ठीकरा में देवे। साग- भाजी गाले तो वणी म्हे अर राबड़ी देवे तो वणी म्हे। ठामड़ो कदीक धोवे तो धोवे नीतर दूजे दन वणी मेइज टुकड़ा नाकी देवे। डोकरी री गडकड़ा वाळी गत वणाई राखी है। व्हा धापी क भूखी है ? घणी दांण ताई आंगलयां चाटया करे अर ओजू रोटी री वाट नालयां करे, पण कोई पूछवा वाळो कोनी। डोकरी री असी गत देखी ने लसमी ने रोवणो आई ग्यो अर टपाक टपाक आंसू टपकाया। अठे खावा पीवा अर ओढवा विछावा रो अतरो टोटो तो कोनी है, पछे डोकरी सागे अश्यो कां करे ?

एक दन तो लसमी, गंगली ने केई दीदो- भलेई म्हने खाणो थोड़ो दिया करो, पण डोकरी ने भूखी तरसी मती राख्यां करो। अबे तो ऐ थोड़ा दनां रा पामणां ओजू है। अणां रो जीव मती दुखावो नीतर घणी हाय लागेला। गंगली, लसमी ने धरकारी- अणी घर आंवताई थूं म्हने हीख (सीख) देवा ढूकेगी ? थने म्हे कतरी दांण कियो के अठे भळायो काम करणो अर टुकड़ा तोड़णा, अणी सिवा दूजी पंचात नी करणी ? पण थने थारी माऊं लखण दीदा व्हेता तो म्हारी वात थारे आसे आवती ? व्हा कई वात कोनी, अबे थांरा दीदा लखण हीज म्हारे घणा काम आवेला। लसमी मन म्हे होच्यो।

रात में गंगली धणी ने भड़कायो- अणी डोकरी तो म्हने हेमूळी रांदे नांकी है। आखो दन पड़ी पड़ी खाया करे, पण कोठी (पेट) नी भरावे। बुढ़ापा मेई अणी रो जीव ठकाणे कोनी। अबे तो अणी रो तीयो (तीसरो) परो रांदे तोई चोखो है। म्हूं तो अबे अणी री हाळी नी रेई सकूं, डोकरी ने राते लेई जाई ने काळा कूड़ा म्हे परी नांको। लसमी बोली- सासूजी ! डोकरी ने काळा कूड़ा में नांकवा लेई जावो, वणी दांण थारे पोता ने सागे लेई ने जाज्यो अर व्हो कूड़ो अणी नेई वताई दीज्यो। थांनेई वणी कूड़ा मेइज नांकणा पड़ेला। लसमी मन म्हे कियो- मती कर व्हूं, जोरो ओ तो सूई लारे डोरो।

थोड़ा दनां पछे डोकरी जाती री (मर गई)। गंगली, लसमी ने कियो- डोकरी रो ओ गारा रो ठीकरो अबे बारणे परो फेंक। लसमी घणी दांण तांई वणी ने हाथ म्हे लेई ने देखती री। अबे अणी ठीकरा ने अतरो कांई निरखे (देखे) है ? अणी म्हे अश्यो कांई है ? गंगली पूछयो। लसमी बोली- थोड़ा दन पछे थांरेई ओ ठीकरो चावेला, वणी दांण म्हूं कठे लेवा जाऊंला ? अणी नेइज अवेरे नै परो मेलूं। गंगली आ वात सूण ने मूंडो लटकायो- ओ गेलो तो लसमी ने मेइज वतायो है ? अबे बुढ़ापा म्हे म्हारो कांई व्हेई ?

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
करें कॉल : 94142-39648

जवानसिंह सिसोदिया
वरिष्ठ साहित्यकार
नाथद्वारा 98286-66953

"SHREE"
Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101
धमाका ऑफर
लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....
ब्राण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में
ब्राण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर
संकल्प कोचिंग क्लासेज
रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली
:: संकल्प टीम ::
रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी
हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर
राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक
सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।
संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

GM फायनेन्स & प्रोपर्टी
होम लोन, मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन, जीवन बीमा,
मकान प्लॉट, कृषि भूमि, क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।
दिलीप जैन
मो. 9214384205 9602997715

जे.के. मोड, होलीथड़ा, कांकरोली, जिला-राजसमंद

vedanta
transforming elements

पर्यावरण की देखभाल हमारी पहली प्राथमिकता है

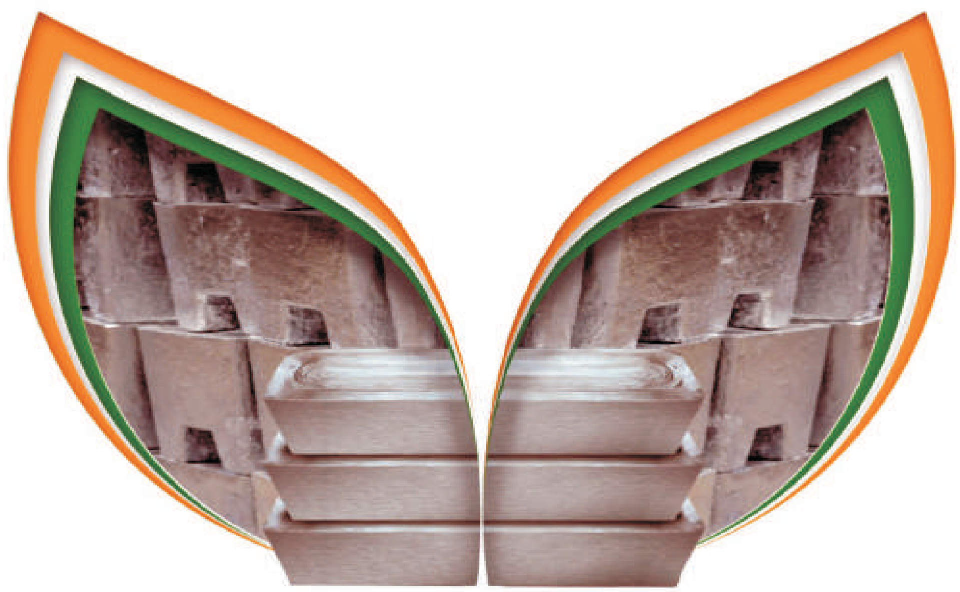

73वें स्वतंत्रता दिवस पर देश की अग्रणी धातु और खनन कम्पनी बनकर हम इस प्रतिबद्धता को दोहराते है...

HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India

Regd Office: Yashad Bhawan, UDAIPUR-313 004 PBX No. 0294-6604000, CIN-L27204RJ1966PLC001208, www.hzlindia.com

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला–राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To